नवम्बर २००१ Rs. 10/-

चन्दामामा

बाल विशेषांक

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०५ नवम्बर - २००१ सञ्चिका - ११

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणी

यह विशेषांक हमारे नन्हें पाठकों के नाम

जब भी हम नवम्बर के बारे में सोचते हैं, तो हमें तुरन्त बाल दिवस की याद आती है। हम लोग पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिन, पर १४ नवम्बर को, सन् १९५० के दशक से ही बाल दिवस मनाते आ रहे हैं।

लेकिन इससे पूर्व ही संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल असेम्बली ने सभी देशों को बच्चों की भलाई के लिए बाल दिवस मनाने का निर्देश दिया था। यह सन् १९५४ की बात है। इसके पश्चात् २० नवम्बर १९५९ को जनरल असेम्बली ने बच्चों के अधिकारों की घोषणा की। तब यूनीसेफ ने इसी तारीख - २० नवम्बर - को विश्व बाल दिवस घोषित किया।

और नवम्बर माह इस प्रकार पूरे तरीके से बच्चों के मुस्कुराते चेहरों से जुड़ गया है। नवम्बर का दूसरा आकर्षण है सबका मनपसंद त्यौहार दिवाली, जो सभी के जीवन में उजाला लेकर आता है। हम आशा करते हैं कि इस साल दिवाली हमेशा से अधिक बच्चों के जीवन में प्रकाश लायेगी। यह इसलिए कि पटाखे बनानेवाली कम्पनियों ने हाल ही में घोषणा की है कि पटाखे बनानेवाले जैसे खतरनाक उद्योग में अब बच्चे काम नहीं करते हैं। यह सभी के लिए खुशी की बात है।

चन्दामामा हमेशा अपने नन्हे पाठकों के लिए प्रकाशमय और हर्ष भरा विषय लाता रहा है। पिछले दो सालों में नवम्बर का अंक एक विशेष अंक रहा है। इस बाल-विशेषांक में प्रकाशित कई कहानियाँ और चित्र बच्चों द्वारा भेजे हुए होते हैं।

चन्दामामा परिवार का विश्वास है कि बच्चों का अधिकार मात्र खाना-कपडा, मकान, अच्छी शिक्षा और प्यार तक ही सीमित नहीं है। उनकी प्रतिभा को बढ़ाने के लिए और उनके भीतर छिपी कला को बाहर निकालने के लिए अवसर प्रदान करना भी हमारा कर्तव्य है। चन्दामामा का बाल विशेषांक बच्चों को एक ऐसा अवसर देकर उनकी उन्नति की पहली सीढ़ी बनने की आशा करता है।

सम्पादक : *विश्वम*

'भारत के नायक' प्रश्नोत्तरी में भाग लीजिए और जीतिए आकर्षक पुरस्कार

भारत के नायक-२

क्या आपको खेल-कूद पसंद है? पेश है खेल-कूद से संबंधित भारत के नायकों पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी...

तीन पूर्णतः सही प्रविष्टियों को एक-एक साईकिल मिलेगी।

1. इन्होंने १९३२ में लॉण एन्जेलस ओलम्पिक में भारतीय हॉकी टीम का नेतृत्व कर, उसे स्वर्ण पदक दिलाया। उन्होंने १९२६ से १९४८ के बीच में अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी मैचों में लगभग १००० गोल किए ये कौन थे?

   ....

2. वे एक बार जूनियर विम्बल्डेन चैम्पियन रह चुके हैं। अब वे भारत के एक उत्साहित टेनिस जोड़ी में शामिल हैं। वे कौन हैं?

   ....

3. ये बल्लेबाज थे और लिटिल मास्टर कहलाते थे। इन्होंने सबसे पहले १०,००० से अधिक रन बनाये। क्या आपको उनका नाम पता है?

   ....

4. वे चैस में विश्व चैम्पियन है। सभी भारतीय उन्हें जानते हैं। और आप भी जरूर जानते होंगे।

   ....

5. इन्होंने १९८० में ऑल ईंग्लैण्ड बैडमिंटन चैम्पियनशिप जीतकर भारत को इस खेल में विश्वस्तर पर ला दिया। वे नौ वर्षों तक लगातार बैडमिंटन राष्ट्रीय चैम्पियन रहे। क्या आप उन्हें जानते हैं?

   ....

हर प्रश्न के नीचे दी गई रिक्त स्थान को भरिए। इन पाँचों में से आपका पसंदीदा नायक कौन है? और क्यों? सिर्फ दस शब्दों में इसका उत्तर दीजिए।

....

प्रतियोगी का नाम: ....

आयु: .... कक्षा: ....

पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

कृपया इस पन्ने को अलग करके इस पते पर ५ दिसम्बर २००१ से पहले भेजिए।

भारत के नायक प्रतियोगिता-२
चन्दामामा इन्डिया लिमिटेड
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

कुछ निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष के बच्चों के लिये हैं।
२. विजेता प्रविष्टियों के आधार पर चुने जाएँगे, जो सभी भाषाओं में होंगी। यदि एक से अधिक सभी पूर्ण सही प्रविष्टि मिली तो, मेरे पसंदीदा खिलाडी के बर्णन के आधार पर विजेता चुने जायेंगे।
३. निर्णायक मण्डल का निर्णय आखिरी होगा।
४. कोई भी पत्र व्यवहार इस विषय पर नहीं देखा जायेगा।
५. विजेता को डाक द्वारा सूचना दे दी जायेगी।

पुरस्कार देनेवाले हैं
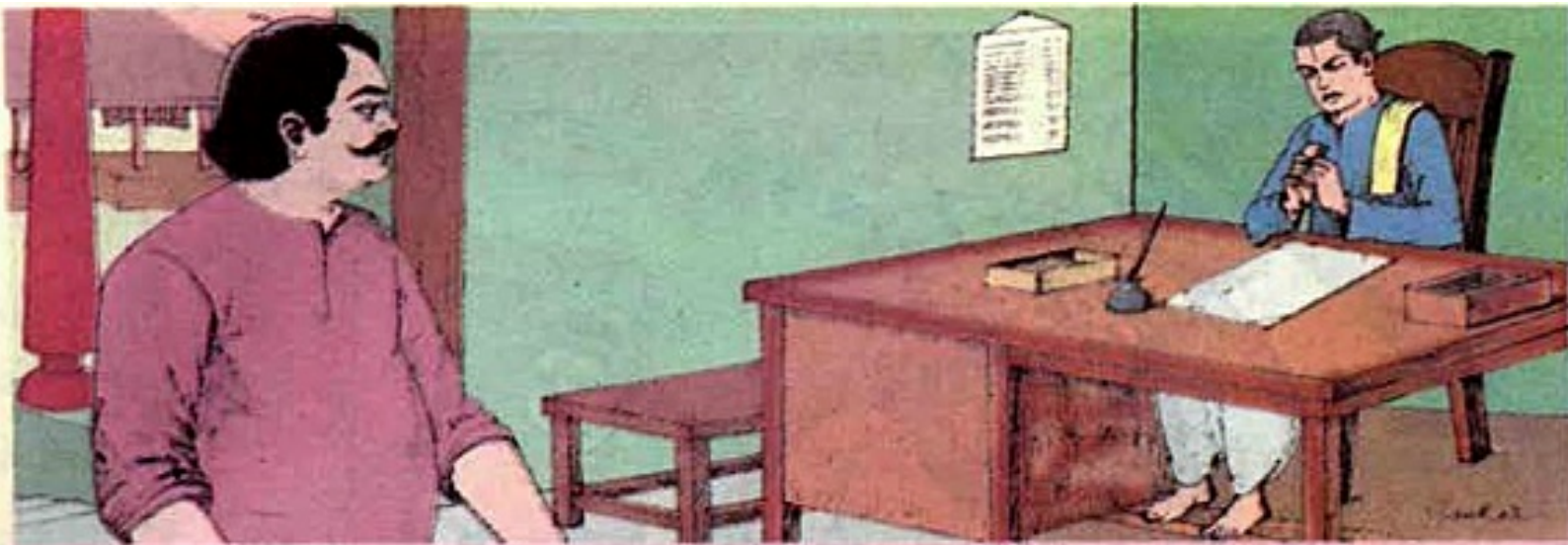
समय का मूल्य

दीक्षित उस गाँव में सुप्रसिद्ध वैद्य था। सबका कहना था कि वह बड़ा ही बुद्धिमान है और इलाज करने में माहिर है। कमलसेठ नामक सूद का व्यापारी उसे देखने गया।

कमलसेठ को देखते ही दीक्षित ने कहा, ''आइये सेठजी, बैठिये। एक मिनिट ठहर जाइये।'' कहते हुए उसने दवा की पोटलियाँ अंदर रख दीं।

दूसरे ही क्षण बाहर से एक भिखारी की चिल्लाहट सुनायी पड़ी ''मालिक, लंगड़ा हूँ, चल नहीं पाता। दोनों आँखें नहीं है, देख नहीं सकता। दान दीजिए मालिक।''

दीक्षित ने उसे वहाँ से चले जाने को कहा और वह चला गया।

कमलसेठ कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में बाहर से एक और भिखारी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा, ''साहब, बूढ़ा हूँ। कुछ भी करने की ताक़त नहीं है मुझमें। दान दीजिए, पुण्य कमाइए।''

दीक्षित ने इस बार कड़ुवे स्वर में कहा, ''जा, जा, चला जा।'' यह कहते ही वह बूढ़ा भिखारी वहाँ से चला गया।

तब कमलसेठ ने कहा, ''दीक्षितजी, मैं यहाँ इसलिए आया कि...'' कि इतने में बाहर से ज़ोर से ढ़ोल की आवाज़ सुनायी पड़ी।

एक बलिष्ठ व्यक्ति ने अपने चेहरे पर रंग पोतकर कोड़े से अपने को पीटता जा रहा था। उसके बगल में एक औरत थी, जो ढ़ोल पीटती जा रही थी। उन्हें देखते ही दीक्षित फ़ौरन बाहर आया और जेब से एक

- काशीराम -

रुपया निकालकर उस स्त्री को दिया। वे तुरंत वहाँ से चलते बने। दीक्षित लौटकर कुर्सी में बैठता हुआ बोला, ''अब कहिए सेठजी, क्या बात है?''

जो हुआ, उस पर आश्चर्य प्रकट करते हुए सेठ ने कहा, ''मेरा एक छोटा-सा संदेह है।''

''संदेह, संदेह ही होता है। न ही वह बड़ा होता है, न ही छोटा। जो भी हो, बताइये, आपका क्या संदेह है?'' दीक्षित ने पूछा।

''पहले जो दो भिखारी आये थे, उन्हें आपने कुछ नहीं दिया। पर बाद आये ढोलवाली को आपने एक रुपया दान में दिया। पहले जो लंगड़ा और बूढ़ा आये थे, वे कमज़ोर थे, अशक्त थे। पर ये दोनों हृष्ट-पुष्ट हैं, इनके शरीर के सभी अंग ठीक-ठीक हैं। ज़रूरतमंदों को छोड़कर, अयोग्यों को आपने दान दिया। क्या मैं जान सकता हूँ, आपने ऐसा क्यों किया?''

''सही सवाल पूछा आपने सेठजी, असल में भीख देनी ही नहीं चाहिए। मैंने तो अब किसी को भी भीख नहीं दी। अगर मैं लंगड़े को और बूढ़े को भीख नहीं देता तो वे क्या थोड़े ही मर जाते! कहीं और जाकर वे भीख माँग लेते। मैंने ढोलवालों को जो दी, वह भीख है ही नहीं'' दीक्षित ने कहा।

''तो इसे कहा जाए?'' सेठ ने पूछा।

''तो सुनिए। अंत में जो आए थे, वे एकदम भिखारी थे। हम नहीं चाहते कि उनकी कठोर ध्वनि सुनें और कोड़े से अपने को पीटता हुआ देखें। पैसे नहीं दिये तो भी वे चालू रहेंगे। फिर हमें गंदी गालियाँ देते हुए निकल जायेंगे। इसी कारण मैंने तुरंत उन्हें दान दे दिया और भेज दिया। पंद्रह मिनिट भी बचा लिये और मन की शांति भी बचा ली'' दीक्षित ने कहा।

अचानक कमल सेठ को कुछ सूझा और जेब से एक रुपया निकालते हुए कहा, ''लीजिए यह रुपया। मेरे संदेह का उत्तर देने के लिए आपने पंद्रह मिनिट खर्च किये और यह समय आपके लिए मूल्यवान भी है।''

दीक्षित ने वह रुपया नहीं लिया। उसे सेठ की ही ओर सरकाते हुए कहा, ''देखिए सेठजी, आपको ग़लतफहमी हुई है। मैंने खरीदा है, भिखारी के समय को। मैं उसे किसी भी हालत में एक रुपये से अधिक नहीं दूँगा। इसलिए एक ही रुपये का मैंने खर्च किया। परंतु आप खरीद रहे हैं, उस डाक्टर का मूल्यवान समय, जो अपने पेशे में माहिर है। इसलिए यह रुपया पर्याप्त नहीं होगा। इसकी क़ीमत क्या हो, इसका निर्णय करूँगा, आपकी बातें सुनने के बाद। यह सुनने के बाद कि आप किस काम पर आये।''

तब कमल सेठ अपने माथे को रगड़ने लगा, मानों वह भूल गया कि वह किस काम पर आया। दीक्षित ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, ''आप आये हैं, भुलक्कड़पन के लिए दवा माँगने। मैंने ठीक कहा न?''

तब कमल सेठ ने आनंद-भरे स्वर में कहा, ''हाँ, हाँ, अच्छी तरह याद आया। आजकल मैं बहुत भुलक्कड़ होता जा रहा हूँ।''

एक प्रश्नोत्तरी आपके लिए

पुरी

December 1-5, 2001
Konark Festival
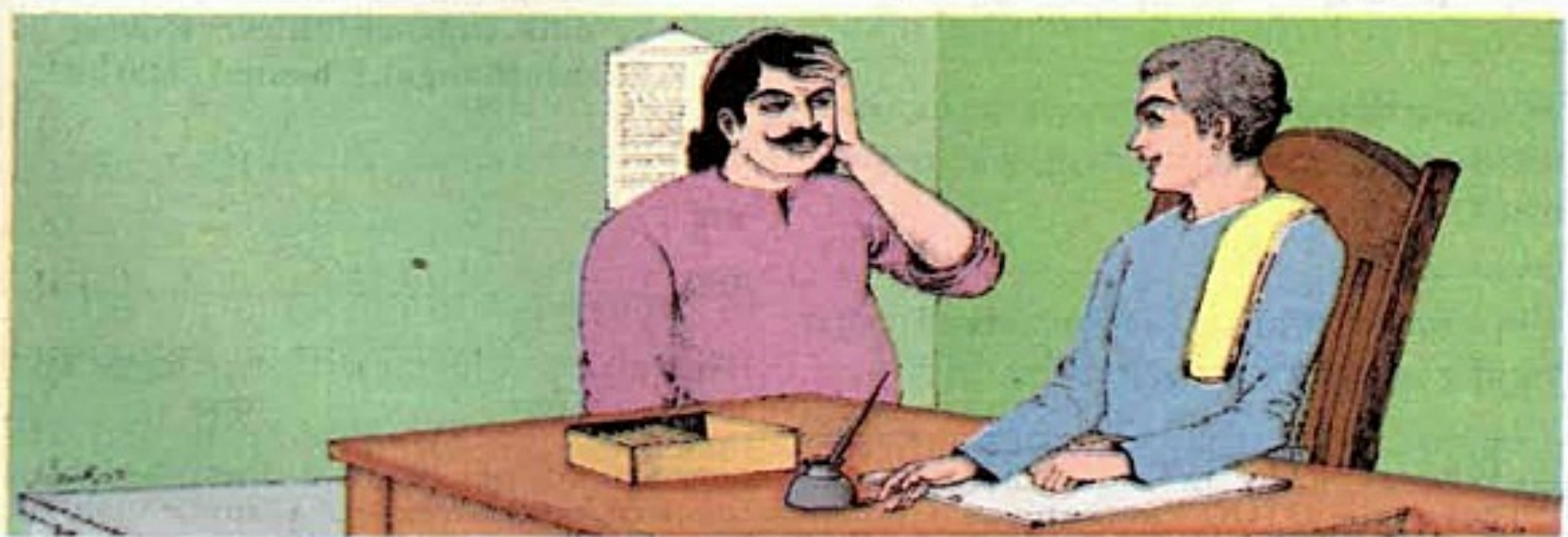
पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पुरी में भाँति-भाँति के स्थान हैं। यदि आप धार्मिक बिचार के हैं, तो आपके लिए जगन्नाथ मंदिर है। क्या आपको समुद्र का किनारा पसंद है? तब तो आपको 'गोल्डेन बीच' से दूर नहीं रहना चाहिए। क्या आप खाना-पीना पसंद करते हैं? पुरी में एक खाद्य बाज़ार भी है।

पुरी में हमारे देश के सबसे सुन्दर बीचेस हैं जो तैरने तथा मछली पकड़ने के लिए बिल्कुल उत्तम हैं। पुरी अपने मंदिरों के लिए बिख्यात है। मुख्य रूप से खूबसूरत जगन्नाथ मंदिर है, जो बारहवीं शताब्दी में बनाया गया था। ६५ मीटर ऊँचा मिनार कॉनीकल है, जो एक मुख्य आकर्षण है। निलांचला पहाड़ी पर बना यह मंदिर जगन्नाथ स्वामी को समर्पित है।

जगन्नाथ मंदिर के प्रवेश में एक सुन्दर ८ मी. ऊँचा सूर्य खम्भ है जो कि पहले कोणार्क के सूर्य मंदिर में हुआ करता था।

बार्षिक रथ-यात्रा और आनन्द बाजार, जो विश्व की सबसे बड़ी खाद्य बाजार है, ये दो जगन्नाथ मंदिर के मुख्य आकर्षण हैं। लगभग २०,००० लोगों की रोज़ी इस मंदिर पर निर्भर है। पुरी में खरीदारी करनेबालों के लिए भी एक सुखद स्थान है। यहाँ पर भाँति-भाँति की हस्त कलाएँ जैसे पत्थर की मूर्तियाँ, लकड़ी पर नक्काशी, सीपियों के सामान, कपड़े पर पट्टा पेंटिंग और अन्य सुन्दर हस्तकलाएँ हैं।

बहाँ कैसे जाया जाए : पुरी भुवनेश्वर से लगभग ६० कि.मी. दूर है और ३५ कि.मी. कोणार्क से।

एक प्रश्नोत्तरी आपके लिए !

१४ वर्ष के बच्चों के लिए।

प्रतिस्पर्धा - III

१. जगन्नाथ भगवान के बहन और भाई का नाम क्या है?

....

२. रथ-यात्रा के पूर्व सभी मूर्तियाँ एक सप्ताह के लिए एक छोटे से मंदिर ले जायी जाती हैं जो बहाँ से २ कि.मी. दूर है। यह कौनसा मंदिर है?

....

३. भारत के सिर्फ चार मंदिरों में ६४ योगिनियाँ चित्रित है। इनमें से एक मंदिर उडीसा में है। वह कहाँ है?

....

अपने उत्तर प्रश्नों के नीचे दिए गए खाली स्थानों में लिखिए और नीचे दिए गए कूपन को भरकर इस पते पर भेजिए।

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited
No.82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

नाम : ....

आयु : ....

पता : ....

....

पिन.................... फोन ....

Winners picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for **3-days, 2-night** stay at any of the **OTDC Panthanivas**, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism family members. Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar - 751 014. Ph : (0674) 432177, Fax : (0674) 430887, e-mail : ortour@sancharnet.in. Website : Orissa-tourism.com

यक्ष पर्वत

11

(पहाडी दुर्ग में वीरपुर के घुडसवारों ने स्वर्णाचारी को हराया। तब वह चंद्र उष्ण योद्धाओं के साथ जंगल में भाग गया। वहाँ उसे खड्ग जीवदत्त व समरबाहु दिखायी पड़े। गुरु भल्लूक ने अपने शिष्यों की गुरु-भक्ति को साबित करने के लिए, अपने शिष्यों में से एक को पेड़ से नीचे कूदने की आज्ञा दी। उसकी आज्ञा पूरी भी नहीं हुई कि इतने में वह शिष्य ऊँचे पेड़ पर चढ़कर धड़ाम् से नीचे कूद पड़ा।) अब आगे...

गुरु भल्लूक का शिष्य ऊँचे पेड़ से कूदा कि नहीं, जीवदत्त दौड़ता हुआ गया और उसके ज़मीन पर गिर जाने के पहले ही अपना दंड रख दिया। रीछवाला अपने गुरु के नाम का स्मरण करते हुए तेज़ी से आकर उस दंड पर गिरा। जीवदत्त ने बड़ी ही सावधानी से पकड़ लिया और उसे ज़मीन पर खड़ा कर दिया।

रीछवाले को इस बात पर बडा दुख हुआ कि उसे अपनी गुरु भक्ति को प्रदर्शित करने का मौक़ा नहीं दिया गया। उसने दुख-भरे स्वर में कहा, ''आपने मुझे बचा तो लिया, लेकिन स्वर्ग जाने का सुअवसर मुझसे आपने छीन लिया।''

उसकी इन बातों पर जीवदत्त ने हँसकर कहा, ''कौन जानता है कि तुम स्वर्ग जाओगे या नरक। जो भी हो, मरने से बच गये। अब तुम और तुम्हारे गुरु पर समरबाहु की सहायता करने की बड़ी जिम्मेदारी है।''

तब तक गुरु भल्लूक, समरबाहु और खड्गवर्मा वहाँ पहुँच गये। गुरु भल्लूक की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने जीवदत्त व खड्ग से

कहा, "आपने खुद देख लिया न, मेरे शिष्य कितने गुरु भक्त हैं?"

"मानता हूँ कि इनकी गुरुभक्ति लाजवाब है। अब इसे और तुम्हारे एक और शिष्य को मैं एक काम सौंपनेवाला हूँ, जिसे इन्हें पूरा करना होगा।"

गुरु भल्लूक ने एक और शिष्य को अपने पास बुलाया। जीवदत्त ने तब उन दोनों शिष्यों से कहा, "वीरपुर के घुड़सवार इर्दगिर्द कहीं होंगे। तुम दोनों को ऐसा नाटक करना होगा मानों असावधानी की वजह से आप उनके चंगुल में फंस गये। उनको विश्वास दिलाना होगा कि पहाड़ी दुर्ग से भागे समरबाहु के सभी अनुयायी तुम्हारे गुरु के बिल दुर्ग में छिपे हुए हैं। मेरी बात समझ में आयी?"

"हाँ साहब ! हम समझ गये। यह तो गुरु का और राजा का भी काम है। आपके कहे अनुसार ही करेंगे और कामयाब होंगे" भल्लूक के शिष्यों ने कहा।

फिर वे दोनों वहाँ से निकल पड़े। बहुत देर तक जंगल में भटकते रहे। सूर्यास्त के समय उन्होंने दो घुड़सवारों को एक पेड़ के नीचे बैठे देखा। दोनों ने आपस में गुफ्तार की और ऊँचे स्वर में बोले, "गुरु भल्लूक, आप कहाँ हैं? हम यहाँ हैं।" यों चार-पाँच बार चिल्लाते रहे।

उनकी चिल्लाहट सुनकर वीरपुर के घुड़सवार चौंक उठे। उनके दलनायक ने तुरंत म्यान से तलवार निकाली और अपने अनुचरों से कहने लगा, "ये चिल्लानेवाले कौन हो सकते हैं? लगता है कि ये वही रीछ के गिरोहवाले हैं। इनसे हमारी जान को ख़तरा हो सकता है। चलो !" कहते हुए गुरु भल्लूक के शिष्यों की ओर तेज़ी से बढ़े।

घुड़सवारों को देखते ही शिष्यों ने अपनी-अपनी बर्छियाँ नीचे डाल दीं और कहने लगे "साहब, हमें मत मारिए। हम अपनी हार मान लेते हैं। लगता है कि शत्रुओं ने हमारे गुरु को पकड़ लिया। जब वे ही पकड़ लिये गये तब हम किसके लिए जियें?"

इस पर दलनायक ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "तुम्हारे गुरु को शत्रुओं ने पकड़ लिया? वे शत्रु कौन हैं?"

शिष्यों में से एक ने कहा, "साहब, आज सबेरे ऊँटों पर सवार होकर अकस्मात् कुछ लोग

हमारे बिल दुर्ग में घुस आये। उस समय हम सब लोग देवी पूजा में मग्न थे, इसलिए उनसे लड़ नहीं पाये। उन्होंने हम लोगों में से लगभग सबको मार डाला। हम दो ही बच पाये और गुरु के साथ जंगल में भागकर चले आये।''

दलनायक ने कुछ सैनिकों को दुर्ग लौट जाने की आज्ञा दी और उनसे कहा, ''समाचार पहुँचा देना कि शत्रु बिल दुर्ग में छिपे हैं।'' फिर उसने गुरु भल्लूक के शिष्यों से कहा ''शत्रु कहाँ हैं, यह समाचार देकर तुमने हमारी बड़ी मदद की। सेनाध्यक्ष के आते ही तुम्हें उचित पुरस्कार दिलवाऊँगा।''

शिष्यों ने अनिच्छापूर्वक सिर हिलाते हुए कहा, ''हम देवी उपासक हैं। थोड़े ही हम आपके पुरस्कार ग्रहण करेंगे। हमें जाने की अनुमति दीजिए।''

दलनायक ने नाराज़ होकर कहा, ''रुक जाइए। बिल दुर्ग दिखाने की जिम्मेदारी अब आप दोनों पर है। तुम इस पेड़ के नीचे ही खड़े रहो।''

दलनायक के भेजे सैनिकों ने सेनाध्यक्ष को यह समाचार सुनाया। वह खुशी से फूल उठा और कहा, ''इसका मतलब यह है कि वे सभी राजद्रोही एक ही जगह पर मौजूद हैं।'' फिर वह कुछ घुड़सवारों व स्थल सेना को लेकर दलनायक के पास आ पहुँचा।

दलनायक ने सेनाध्यक्ष को पूरा विवरण दिया। सेनाध्यक्ष ने तुरंत बिल दुर्ग में जाने की आज्ञा दी। भल्लूक के शिष्य आगे-आगे जाने लगे और

सैनिक उनके पीछे-पीछे। पंद्रह मिनिटों के अंदर वे सभी बिल दुर्ग के पास पहुँच गये।

सेनाध्यक्ष घोड़े से उतरा और आगे बढ़ा। नीचे की ओर झुककर देखते हुए वह ऊँचे स्वर में कहने लगा, ''अरे, मैं वीरपुर का सेनाध्यक्ष हूँ। बड़ी सेना लेकर आया हूँ। तुम सब लोग हथियार वहीं डाल दो और ऊपर आ जाओ। दो-तीन मिनिटों के अंदर आत्म-समर्पण नहीं करोगे तो मैं खुद सेना सहित बिल दुर्ग में प्रवेश करूँगा और तुम सबकी ख़बर लूँगा।''

पंद्रह मिनिट हो गये, पर बिल से कोई बाहर नहीं आया। सेनाध्यक्ष क्रोध से दाँत पीसता रहा। फिर उसने घुड़सवार सैनिकों को आज्ञा दी कि वे अपने घोड़ों को पेड़ों से बांध दें और तुरंत उस

स्थल पर इकट्ठे हो जाएँ। उनके लौटते ही वह उन्हें और स्थल सैनिकों को लेकर बड़ी ही सावधानी से बिल में उतरने लगा। गुरु भल्लूक के शिष्य उनके आगे-आगे जा रहे थे।

उधर जैसे ही वे बिल के अंदर पहुँचे इधर हठात् चार रीछवाले झाड़ियों से बाहर आये और घोड़ों के दो रक्षक सैनिकों को पकड़ लिया। उन्हें रस्सियों से बांध दिया और कांटोंवाली झाड़ियों में फेंक दिया।

ठीक उसी समय, खड्ग जीवदत्त, गुरु भल्लूक व समरबाहु पहुँच गये। जीवदत्त ने गुरु भल्लूक से कहा, "अब जो गंभीर समस्या हमारे सामने जो है, वह है, वीरपुर के सेनाध्यक्ष को सजीव क़ैद करना। बिल में जिन्होंने प्रवेश किया, उन्हें डराने-धमकाने के लिए उसके द्वार पर सूखी लकड़ियाँ रखी जाएँ, उन्हें जलायी जाएँ। हमें देखना है कि उसका धुआँ अंदर फैलता जाए। यह काम करेंगे, तुम्हारे शिष्य एवं समरबाहु के अनुयायी।"

गुरु भल्लूक की आज्ञा पाकर उसके शिष्य सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा करके ले आये। बिल के मुखद्वार के पास उनमें आग लगायी गयी। जीवदत्त ने बिल के अंदर देखते हुए कहा, "ऐ वीरपुर के सेनाध्यक्ष! तुम और तुम्हारे सैनिकों को हथियार वहीं डालकर दो-तीन मिनिटों में ही बाहर आना होगा। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो बिल को आग लगा देंगे और तुम सब लोग उस आग में जल जाओगे।"

शत्रुओं को ढूँढ़ने में लगे सेनाध्यक्ष को जीवदत्त की चेतावनी सुनायी पड़ी। उसने बिल के कमरों को ढूँढ़ा, किन्तु कहीं भी एक भी आदमी दिखायी नहीं पड़ा। उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि गुरु भल्लूक के शिष्यों ने बड़ी आसानी से उसे धोखा दिया।

वह सोच में पड़ गया कि अब क्या किया जाए। इतने में जलती लकड़ियाँ, अग्नि की ज्वालाएँ और सूखे पत्ते उनके आसपास गिरने लगे। वह समझ गया कि कितनी बड़ी विपत्ति में फंस गया हूँ। उसने हथियार ज़मीन पर डाल दिए और सैनिकों को भी आदेश दिया कि वे अपने-अपने हथियार नीचे डाल दें। उसने बिलद्वार की ओर देखते हुए चिल्लाया "मैं वीरपुर का सेनाध्यक्ष अपने सैनिकों समेत झुक जाता हूँ। निरायुध होकर ऊपर आ रहा हूँ।"

"खड्ग, लगता है सेनाध्यक्ष की बातों में चालकी या धूर्तता नहीं है। क्या उन्हें बिल से ऊपर आने को कह दें?" जीवदत्त ने पूछा।

खड्गवर्मा जवाब दे, इसके पहले ही गुरु भल्लूक ने कहा, "यजमान, राजा और उनके सैनिक विश्वसनीय नहीं होते। पहले मेरे शिष्यों को ऊपर भेजने के लिए कहिए। उनसे पूरा विषय जानने के बाद आगे की कार्रवाई निश्चित कीजिएगा।"

जीवदत्त ने हँसते हुए कहा, "चालाक ही चालाक को पहचानता है। अच्छा भल्लूक, अपने शिष्यों को पहले ऊपर आने को कहो।"

गुरु भल्लूक ने अपनी बर्छी ऊपर उठायी और "वृकेश्वरी माता की जय" कहता हुआ बिल द्वार से चिल्ला उठा "शिष्यों, पहले तुम दोनों ऊपर आना। तब तक वे सबके सब वहीं खड़े रहें। एक इंच भी आगे न बढें। यह पहाडी दुर्ग के महाराज समरबाहु की आज्ञा है।" गुरु की आज्ञा पाते ही दोनों शिष्य ऊपर आ गये।

बिल दुर्ग में खडे वीरपुर सेनाध्यक्ष को अपनी निःसहायता पर बड़ा क्षोभ हुआ। वह डर के मारे थरथर काँपने लगा।

भल्लूक के शिष्यों ने ऊपर आने के बाद पूरा विवरण सुनाया। अब खड्ग जीवदत्त ने सेनाध्यक्ष को ऊपर आने की आज्ञा दी। सेनाध्यक्ष बिल के ऊपर जैसे ही आया और खड़ग जीवदत्त को सविनय प्रणाम करने लगा, जीवदत्त ने उसे समरबाहु को दिखाते हुए कहा, "ये इन प्रांतों के राजा हैं। चंद्रवंशज हैं। तुम्हें झुकना है, इनके सामने।"

वीरपुर के सेनाध्यक्ष ने सिर झुकाकर समरबाहु को नमस्कार किया। इतने में सभी निरायुध सैनिक बिल के ऊपर आ पहुँचे। समरबाहु ने तब स्वर्णाचारी से पूछा

समरबाहु ने खड़ग जीवदत्त से कहा, ''क्षत्रिय योद्धाओं, क्या अपने किले की ओर बढ़ें?''

''राजा की आज्ञा को भला कोई टाल सकता है? ज़रूर चलेंगे!'' जीवदत्त ने कहा।

समरबाहु के अनुयायी ऊँटों और घोड़ों पर सवार हुए। उनके पीछे-पीछे वीरपुर के कैदी सैनिक आने लगे। सबसे आगे थे, समरबाहु, स्वर्णाचारी, खड़ग जीवदत्त। वे भी घोड़ों पर सवार थे।

थोड़ी देर बाद जब वे पहाड़ी दुर्ग के पास पहुँचे तब उन्होंने देखा कि पहाड़ के नीचे के पेड़ों के तले एक छोटा-सा डेरा है। वहाँ ऊँचे आसन पर एक वृद्ध बैठा हुआ है। उसके चारों ओर और लोग भी हैं।

खड़ग जीवदत्त की समझ में नहीं आया कि यह वृद्ध कौन है? इतने में वही वृद्ध दो सैनिकों के साथ उनके पास आया और कहने लगा ''मैं वीरपुर महाराज का प्रधान मंत्री हूँ। हमारे गुप्तचरों के द्वारा मैंने तुम दोनों के बारे में सुन रखा है। तुम दोनों खड़ग जीवदत्त हो न?''

''हाँ'' के भाव में सिर हिलाते हुए खडग जीवदत्त ने उस वृद्ध को प्रणाम किया। इतने में घोड़ों पर सवार होकर आये समरबाहु व स्वर्णाचारी का परिचय कराते हुए उन्होंने उस वृद्ध मंत्री से कहा, ''ये पहाड़ी दुर्ग के राजा समरबाहु हैं। ये उनके महामंत्री स्वर्णाचारी हैं।''

वृद्ध मंत्री ने सिर हिलाते हुए कहा, ''अपनी शक्ति के आधार पर इन जिन प्रांतों को इन्होंने जीता, उनपर महाराज समरबाहु अपना शासन

''महामंत्री, इन शत्रुओं को क्या सजा दें?''

स्वर्णाचारी ने खड़ग जीवदत्त से सलाह-मशविरा करने के बाद कहा, ''महाराज, इन्हें क्या सज़ा दी जाए, यह निर्भर होगा, भविष्य में वीरपुर के राजा की बरती जानेवाली नीति पर। पहले इन्हें अपने पहाड़ी कारागार में बंद रखें।''

समरबाहु ने कहा, ''आपने बहुत ही अच्छा उपाय सुझाया।'' अब तक तो समरबाहु लुटेरों का सरदार मात्र था। पर अब उसकी बातों में, उसके हाव-भावों में राजोचित लक्षण दीखने लगे। इसपर चकित होते हुए खड़गवर्मा ने जीवदत्त से धीमे स्वर में कहा, ''एक छोटी-सी विजय ने लुटेरे समरबाहु में कितना परिवर्तन ला दिया।''

चला सकते हैं। उन्हें इसका पूरा अधिकार है। महाराज की ओर से उनका प्रधान मंत्री होने के नाते मैं यह घोषणा करता हूँ। लेकिन मैं यहाँ आया हूँ, तुम दोनों के लिए। एकांत में तुम दोनों से बात करना चाहूँगा।''

समरबाहु को अपने राजा होने की बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। उसने वीरपुर के सेनाध्यक्ष से कहा, ''आप और आपके सभी सैनिक मेरे मेहमान हैं। कल सबेरे आप लोग अपनी राजधानी लौट सकते हैं।''

वीरपुर के प्रधानमंत्री ने समाबाहु को मंद मुस्कान भरते हुए देखा और खड़ग जीवदत्त को थोड़ी दूर ले जाने के बाद उनसे कहा, ''खड़ग जीवदत्त, हमने ऐसे तो अपने गुप्तचरों के द्वारा तुम दोनों के बारे में बहुत बातें सुनीं और जानी। पर उनसे भी अधिक बातें तुम्हारे बारे में सुनीं, एक यक्ष से।''

''यक्ष! वह यक्ष कौन है?'' दोनों ने एक साथ वृद्ध से पूछा। चकित जीवदत्त ने खड़गवर्मा से कहा, ''खड्ग, ये मंत्री जिस यक्ष का ज़िक्र कर रहे हैं, कहीं वह यक्ष तो नहीं, जो पद्मपुर की राजकुमारी पद्मावती का अपहरण करके ले गया?''

खड़गवर्मा भी आश्चर्य में शोकायमान था। वीरपुर का मंत्री कोई जवाब दिये बिना आगे बढ़ रहा था। वह सामने के एक टीले पर जाकर खड़ा हो गया और नीचे बहती हुई नदी की ओर हाथ दिखाते हुए कहने लगा ''खड़ग जीवदत्त, रथ के आकार में नदी में दिखायी देनेवाली उस नाव को ध्यान से देखो।''

खड़ग जीवदत्त ने वह नाव देखी। वह पत्थर के रथ के आकार में थी, जिसके बारे में उन्होंने पद्मपुर में सुना था और अरण्यपुर में देखा था।

जीवदत्त ने बड़े ही उत्साह के साथ अपना दंड ऊपर उठाया और कहा, ''आहा, इतने लंबे अर्से के बाद वह दुष्ट यक्ष हमसे युद्ध करने सन्नद्ध होकर आया है। बहुत अच्छा, हमें भी अपनी शक्ति को दिखाने का अवसर आ गया।'' कहते हुए वह नदी की ओर बढ़ा। *(क्रमश:)*

अंधेरी कोठरी

एक चोर राजभवन में चोरी करने गया और पकड़ा गया। पर पकड़े जाने के पहले उसने एक सैनिक को घायल कर दिया। सैनिक उसे उसी समय राजा के पास ले गये और सारी बातें बतायीं।

राजा नाराज़ हो उठा और आज्ञा दी कि ''इसे पाँच सालों तक काल कोठरी में बंद रखो। फिर भी अगर यह ज़िन्दा रहा तो रिहाई के दिन इसे मेरे पास ले आना।''

पाँच साँल देखते-देखते गुज़र गये। सैनिक उस चोर को राजा के पास ले आये। चोर एकदम दुबला-पतला हो गया था और रोगग्रस्त लग रहा था। उसे देखते ही राजा का मन दया से पसीज उठा। राजा ने उससे कहा, ''लगता है, काल कोठरी में तुमने बहुत कष्ट सहे। ठीक है, आज तुम्हें रिहा कर रहा हूँ।''

तब चोर ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, ''महाराज, काल कोठरी में पहले मैं बहुत दुःखी था, वहाँ रहना मुश्किल लगता था, पर बाद में सुख ही सुख का अनुभव किया। पहले सबेरा होते ही नींद से जाग जाता था, भूख मिटाने के लिए उपाय सोचता रहता था कि कहाँ चोरी करूँ, कैसे करूँ और इसके लिए किस गली के किस घर में घुसूँ। मुझमें एक बड़ी बुरी आदत है। रोशनी और ठंडी हवा मुझसे सही नहीं जातीं। कृपा करके मुझे फिर से उस काल कोठरी में ही रहने की अनुमति दीजिए।''

उसका जवाब सुनते ही राजा की समझ में आ गया कि मनुष्य चाहे कितने ही कष्ट क्यों न सहे, परिस्थितियों का वह आदी बन जाता है और उसी को वह पसंद करने लगता है। उसने उसे सांत्वना देते हुए कहा, ''डरो मत। धीरे-धीरे तुम स्वेच्छापूर्ण जीवन के भी आदी बन जाओगे।'' फिर राजा ने उससे कहा कि तुम आगे से मेरे माली के साथ काम करना और जो काम पसंद हो, करते रहना।

- भवानी शंकर.
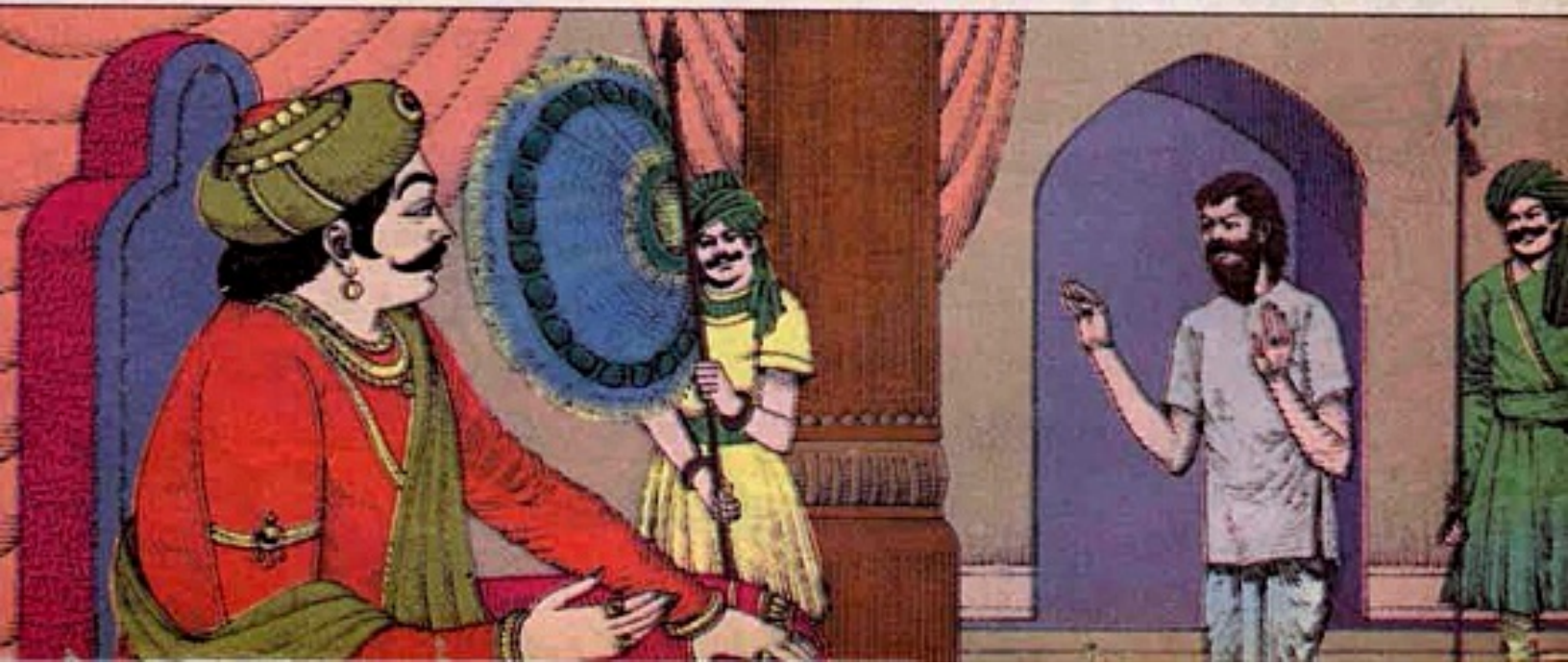
वेताल कथा

विश्वसेन की दिग्भ्रांति

पवनकुमार,
बेल्लारी

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, बारंबार मेरे समझाने के बाद भी ख़तरा क्यों मोल रहे हो? क्यों इतनी आधी रात को श्मशान में घूमते-फिरते हो? तुम जानते तो हो कि यहाँ भूत-प्रेत हैं, भयंकर जंतु हैं, जो किसी भी क्षण तुम्हारा अहित कर सकते हैं। एक क्षत्रिय को ऐसा
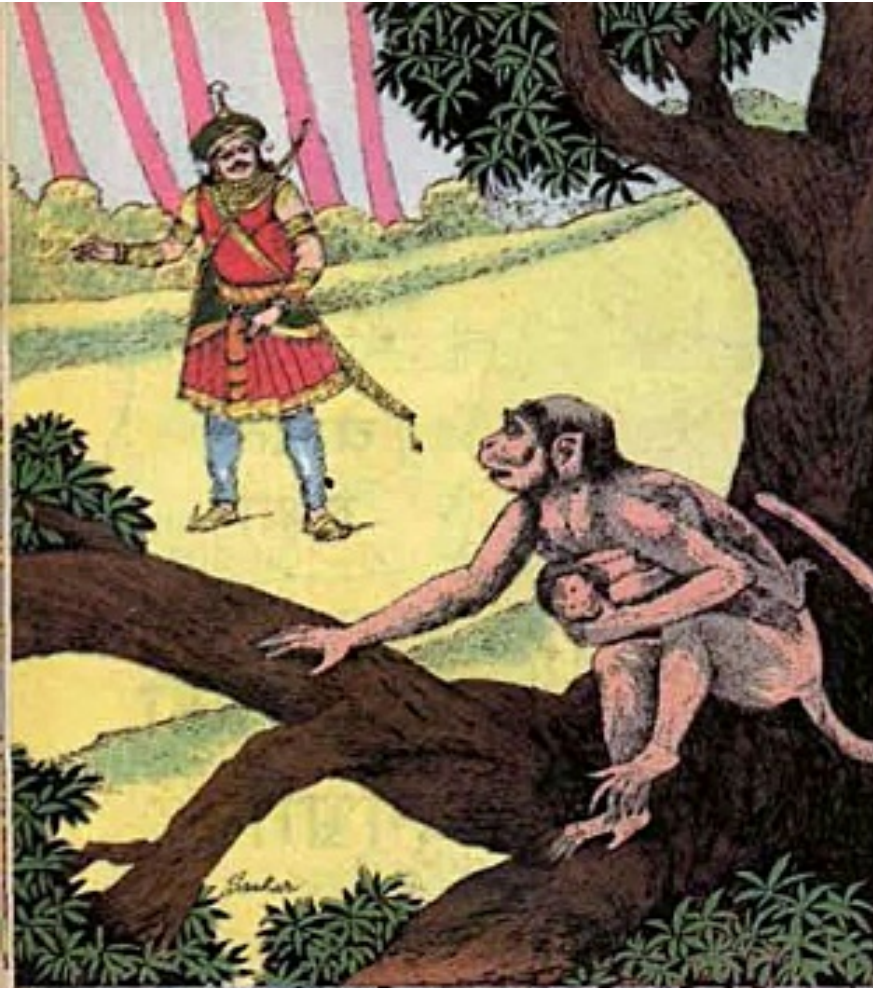
करना नहीं चाहिए। यह कदापि क्षत्रियोचित भी नहीं है। तुम्हारे इस कठोर परिश्रम को देखते हुए मुझे लगता है कि तुम अपने राज्य का विस्तार करना चाहते हो, उसके लिए एक बहुत बड़ी सेना को संगठित करना चाहते हो, मंत्र-तंत्रों की सहायता से संपदा इकट्ठा करना चाहते हो। अगर तुममें ऐसी भ्रांति हो तो भूल जाओ। यह कभी संभव नहीं होगा। यह दिवा-स्वप्न मात्र बनकर रह जायेगा। तुम्हें सावधान करना, सही मार्ग दर्शाना मेरा कर्तव्य है। इसलिए तुम्हें सावधान करने विश्वसेन नामक एक राजा की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। जब उसकी सब इच्छाएँ पूरी होने ही जा रही थीं, तब उसने चंचल चित्त होकर अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार ली। किया-कराया सब मिट्टी में मिल गया। मुझे भय है कि कहीं तुम भी उस राजा की तरह अंतिम क्षणों में कोई ऐसी गलती न कर बैठो, जिससे तुम्हारी सारी आशाएँ निराशा में बदल न जाएँ। अपनी चिंतन व व्यवहार शैली को सुधारो, जागरुकता बरतो, अपने को संभालो अथवा तुम्हारा अनर्थ होगा। अपनी थकावट दूर करते हुए ध्यान से राजा विश्वसेन की कहानी सुनो !'' फिर बेताल यों सुनाने लगा।

विश्वसेन मैथिली राज्य का राजा था। आखेट में उसकी विशेष रुचि थी। उसके पीछे वह पागल-सा था। राज्य से संबंधित कितने ही मुख्य कार्यों पर वह ध्यान नहीं देता था और शिकार करने चला जाया करता था। एक बार वह चंद सैनिकों को लेकर शिकार करने जंगल चला गया। दो दिनों तक उसने तरह-तरह के जंतुओं का शिकार किया।

तीसरे दिन जब वह राजधानी लौटने निकल पड़ा तब उसने दो सैनिकों के बीच चल रही बातें सुनी। उनकी बातों को सुनकर विश्वसेन में उन आश्रमों को देखने की इच्छा जगी। उसने तुरंत अपने सैनिकों से कहा, ''आप लोगों को मेरे साथ आने की कोई ज़रूरत नहीं। यहाँ के ऋषियों का दर्शन करने जा रहा हूँ। सूर्यास्त के पहले ही लौट आऊँगा।''

इधर दो सालों से पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, जिसके कारण राज्य में अकाल पड़ा। परिस्थितियाँ गंभीर होती जा रही हैं। लोगों में हाहाकार मचा हुआ है। जाते-जाते राजा इसी सोच में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस समस्या को कैसे सुलझाया जाए। तब उसने अचानक देखा कि बंदर का एक बच्चा पेड़ से गिर गया और पीड़ा से तड़पने लगा।

''बेचारा छोटा बच्चा है। इसकी माँ शायद मर चुकी होगी। पेड़ों की टहनियों पर घूमने-फिरने का अच्छा अभ्यास इसे अब तक नहीं हुआ होगा। अच्छा ! यही होगा कि इसे अपने साथ ले जाऊँ और किसी सैनिक को इसे पालने-पोसने का भार सौंपूँ।'' यों सोचकर राजा ने उसे पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। इतने में उसकी माँ बंदरी पेड़ से उछलकर ज़मीन पर आ गयी और अपने बच्चे

को लेकर भाग गयी ; उसने अपने नखों से राजा के हाथ को खरोंचा भी।

इस घटना ने राजा के मन को अशांत कर दिया। थोड़ी दूर और चलकर वह एक ऋषि के आश्रम में पहुँचा। ऋषि ने राजा का सादर स्वागत किया और कहा, "राजन्, आप आखेट करने इतनी दूर चले आये, पर आपके मुख पर आनंद दृष्टिगोचर नहीं होता। क्या मैं जान सकता हूँ, इसका कारण क्या हो सकता है?"

विश्वसेन ने लंबी सांस खींचकर बंदरवाली घटना का विवरण दिया और साथ ही यह भी कहा कि माँ बंदरी ने उसके हाथ को खरोंचा भी। अपनी चिंता व्यक्त करते हुए उसने ऋषि से कहा, "मानव दूसरे प्राणियों के प्रति दया व सहानुभूति दिखाना चाहता है। असहायों की मदद करने की उसकी मनोच्छा है। पर लगता है कि इसका भी उसे हक़ न रहा। देखते-देखते परिस्थितियाँ दिन ब दिन बदलती जा रही हैं। किसी की भलाई करने से भी उसे डरना पडता है।"

राजा की इन बातों पर ऋषि ने मुस्कुराकर कहा, "महाराज, मुझे तो लगता है कि आप उन आदमियों में से नहीं हैं, जो किसी भी विषय को लेकर इतने गंभीर रूप से सोचते हैं, अपने ही आप तर्क-वितर्क करते हैं। आपने कितने ही बेचारे जंतुओं को अब तक मारा होगा। तब उनकी संतान के बारे में आपने कुछ भी सोचा नहीं होगा। यह सोचने का भी प्रयत्न आपने किया नहीं होगा कि उनको मारने से उनकी संतान पर क्या गुज़रेगी, वे अनाथ होकर कितना छटपटायेंगी। उस बंदर के बच्चे को लेकर अब आप बहुत परेशान लग रहे हैं। यह तो सचमुच आश्चर्य की बात है। इधर दो वर्षों से वर्षा के अभाव के कारण अकाल पड़ गया। भविष्य में यह समस्या

विकराल रूप धारण करेगी। आप राजा हैं। जनता की रक्षा करना आपका धर्म है। क्या आपने कभी सोचा कि यह समस्या कैसे सुलझायी जाए और लोगों को इस अकाल से कैसे बचाया जाए ?"

ऋषि की इन कटु बातों को सुनकर राजा निस्तेज रह गया। उसने सकपकाते हुए कहा, "ऋषिवर, यह कोई असाधारण स्थिति नहीं है। चार-पाँच सालों में एक बार वर्षा के अभाव के कारण ऐसा अकाल पड़ता है। लंबे अर्से से यह चला आ रहा है। मेरे पूर्वजों के शासन-काल में भी ऐसा बहुत बार हुआ है।"

"तो क्या इसका कोई उपाय नहीं?" ऋषि ने कटुता-भरे स्वर में पूछा।

विश्वसेन दो क्षणों तक सोच में पडा रहा, फिर सिर झुकाकर ऋषि को प्रणाम करते हुए कहा, "अवश्य ही इसका उपाय है, ऋषिवर। अधिकाधिक संपत्ति कमायी जाए, सेना-बल पर्याप्त मात्राओं में

बढ़ाया जाए और अन्य राज्यों को अपने अधीन कर लिया जाए। इससे उन-उन राज्यों से अनाज तथा अन्य सामग्रियों को अपने राज्य में ले आया जाए। इससे समस्या का परिष्कार होगा, अकाल दूर होगा और प्रजा खुश रहेगी।''

''वाह, कितना अच्छा सोचा आपने। इसका यह अर्थ हुआ कि आप धन व सेना-बल के आधार पर सम्राट बनने की आकांक्षा रखते हैं। अगर आपका यही उद्देश्य हो तो एक काम कीजिए। यहाँ से चार कोस की दूरी पर उत्तर की ओर यात्रा करेंगे तो वहाँ आपको चांदी के पर्वत दिखायी देंगे। जितनी भी चांदी चाहिए, अपने राज्य में ले जा सकते हैं।'' ऋषि ने हंसते हुए कहा।

ऋषि के कहे अनुसार विश्वसेन उसी तरफ़ बढ़ा, जहाँ चांदी के पर्वत थे। उसने सूर्य की कांति में चमकते हुए चांदी के पर्वतों को वहाँ पाया। खुश होता हुआ मन ही मन कहने लगा ''बाप रे, इतनी चांदी! इसे अपने राज़्य में ले जाने के लिए सौ-सौ वाहन चाहिए।'' फिर लौटने वह मुड़ा।

तब उसने वहाँ समीप ही स्थित मुनि की एक पर्णशाला देखी। उस समय मुनि हिरनी के दो बच्चों को कोमल पत्ते खिला रहे थे। वहाँ से थोड़ी दूरी पर खडे होकर हिरन व हिरनी अपने बच्चों को प्यार भरी आँखों से लगातार देख रहे थे। इस दृश्य को देखकर राजा के मन को धक्का लगा। वह सोचने लगा, ''बाप रे! ऐसे मासूम जंतुओं को मारने मैं जंगल आता हूँ? मैं कितना पापी हूँ।'' वह आगे बढ़ने में संकोच कर ही रहा था कि इतने में मुनि ने उसे देख लिया और कहा, ''राजन्, संकोच किस बात का? आओ। अंगरक्षकों के बिना अकेले ही इतनी दूर कैसे चले आये?''

विश्वसेन ने मुनि को सविनय प्रणाम किया। वह नहीं चाहता था कि कोई बात मुनि से छिपाऊँ, इसलिए उसने चांदी के पर्वतों का जिक्र किया और वहाँ आने का कारण बताया।

सब कुछ सुनने के बाद मुनि ने राजा को नख से शिख तक देखा और कहा, ''राजा, चांदी के इन पर्वतों को देखकर तुम बहुत ही संतृप्त लगते हो। उत्तर की ओर चार कोस और जाओगे तो वहाँ तुम्हें सोने के पर्वत दिखायी देंगे।''

सोने के पर्वतों की बात सुनते ही विश्वसेन की खुशी का ठिकाना न रहा। मुनि को उसने नमस्कार किया और पैदल ही उत्तर दिशा की ओर बढ़ा। वहाँ पहुँचने पर उसने सोने के उन पर्वतों को देखा, जो अद्भुत कांति से चमक रहे थे। आश्चर्य व आनंद में डूबा, वह कहने लगा, ''वाह, मेरा जीवन धन्य हो गया। सोने के ये सारे पर्वत मेरी निजी संपत्ति हैं।'' आनंद में मस्त वह चिल्लाने लगा।

थोड़ी ही दूरी पर एक सरोवर था। एक योगी

स्नान करके बाहर आ रहे थे। उन्होंने राजा की बातें सुन ली थीं। उन्होंने अपने हाथ का दंड ऊपर उठाया और कहने लगे, "राजा, सोने के इन पर्वतों को देखकर अत्यधिक संतुष्ट लग रहे हो। ये तो वज्रों की उन खानों के सामने कुछ भी नहीं है, जो यहाँ से चार कोसों की दूरी पर हैं।"

"क्या यह सच है, योगेंद्र?" कहते हुए उसने योगी को प्रणाम किया। क्षण भर भी वहाँ रुके बिना वह आगे बढ़ा।

योगी के कहे अनुसार ही उसे वज्रों की खानें दिखायी पड़ीं। उन वज्रों पर सूर्य की कांति पड़ते ही उनकी सुंदरता में चार चांद लग जाते थे। उन वज्रों पर कहीं-कहीं फन फैलाये सर्प उसे दिखायी पड़े।

वज्रों की खानों को देखते हुए विश्वसेन आनंद से पागल होने लगा। कांपते हुए स्वर में वह कहने लगा, "मेरे सैनिक अपने एक-एक बाण से दो-तीन इन महासर्पों को मार सकते हैं। इन सारे वज्रों को हाथियों व ऊँटों पर लादकर अपना राज्य ले जाऊँगा। राज्य को संपन्न बनाऊँगा। सेना-बल को अत्यधिक बढा दूँगा और आसपास के राज्यों को अपने अधीन कर लूँगा। पूरे देश का सम्राट बनूँगा और निराटंक शासन करूँगा। मेरे सारे सपने साकार हुए। मुझसे बड़ा कोई नहीं है। इस संसार भर में कोई और नहीं है।"

तब अचानक एक गंभीर कंठ स्वर गूँज उठा, "राजन्, तुमसे भी अधिक संपन्न, तुमसे भी अधिक भाग्यवान, तुमसे भी अधिक महान व्यक्ति इस संसार में कितने ही हैं। उनमें से मैं भी एक हूँ।" इन बातों को सुनते ही विश्वसेन चौंक उठा।

दूसरे ही क्षण दिव्य तेजस्विता से प्रकाशमान एक आकार उसके सम्मुख प्रत्यक्ष हुआ। राजा दिग्भ्रांत होकर स्तब्ध खड़ा रह गया।

तब उस तेजस्वी ने गंभीर स्वर में कहा, "तुम्हारे सपने साकार हो गये है न? चांदी, सोना, वज्र अपने राज्य में ले जाना चाहते हो, अपने सेना-बल को अत्यधिक बढ़ाना चाहते हो, राजाओं को युद्ध में हराकर उन-उनके राज्यों को अपने अधीन करना चाहते हो, सम्राट बनना चाहते हो, किन्तु क्या यह परम सत्य भूल गये कि इन युद्धों के कारण अपार धन-नष्ट होगा, जन-नष्ट होगा? क्या तुमने इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया?"

इसपर विश्वसेन ने बिना घबराये साहसपूर्वक कहा, "महापुरुष, आप तो जानते ही होंगे कि राज्य-विस्तार क्षत्रिय के लिए कोई नई आकांक्षा नहीं है। यह क्षत्रिय धर्म है : वह उसी के लिए जीता है और उसी के लिए मरता है।"

तेजस्वी पुरुष ने मुस्कुराकर कहा, "जनता के कल्याण को जो भी हानि पहुँचाता है, वह धर्म नहीं कहलाता। हर शासक क्षत्रिय धर्म के नाम पर दूसरे

राज्यों को जीतना चाहता हो तो तुम्हें मालूम नहीं कि इससे प्रजा की स्थिति कितनी दयनीय हो जाती है, वे कितने संकट में घिर जाते हैं? तिसपर हार-जीत जन्म से ही अंधे के हाथों के मोहरे जैसे हैं। राजन्, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि या तो युद्ध में जीतकर सम्राट बनोगे अथवा भविष्य में अकाल न हो, इसके प्रयत्नों में सफल होओगे, किसी एक क्षेत्र में ही तुम विजेता बन पाओगे,'' कहकर तेजस्वी पुरुष अदृश्य हो गये।

राजा विश्वसेन दूसरे ही क्षण लौटकर उसी जगह पर पहुँच गया, जहाँ उसके सैनिक उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। पर इस बार वह पुराने मार्ग पर से न आकर दूसरे मार्ग से होता हुआ वहाँ आया। वहाँ पहुँचते ही राजा ने सैनिकों से कहा, ''आज से तुम लोग अपने हथियारों को अपने ही घरों में सुरक्षित रखो। आगे हर कोई राज्य के गाँव-गाँव में जायेगा और वहाँ की परिस्थितियों का ब्योरा मुझे समय-समय पर देता रहेगा। अब राजधानी चलें। बेताल ने विश्वसेन की 'कहानी सुनाने के बाद विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, विश्वसेन की दीर्घकाल से चाहत थी कि अपार धन-राशि कमाऊँ और सेना-बल को अत्यधिक बढ़ाऊँ। वह यह भी चाहता था कि अन्य राज्यों पर आक्रमण करके उन्हें अपने वश में कर लूँ। अपने को सम्राट कहलाने की बड़ी महत्वाकांक्षा थी। उसकी इच्छा पूरी हुई। उसे अपार संपदा मिली। अलावा इसके, तेजस्वी पुरुष ने उसे आशीर्वाद भी दिया था कि युद्ध में या अकाल को मिटाने में उसे सफलता मिलेगी। परंतु उसने स्पष्ट बताया था कि इन दोनों में से एक ही में वह सफल होगा। लेकिन युद्ध में ही जीतने का वर उसने क्यों नहीं माँगा? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

इसपर विक्रमार्क ने कहा, ''यह सर्वथा सच नहीं कि जिसमें धन व कीर्ति पाने की आकांक्षा होती है, उसमें मानवता, दया, सहानुभूति, समवेदना के भाव होते ही नहीं। बंदर के बच्चे को जीवन-दान के विषय में ऋषि के हिरनी के बच्चों को देखकर उसमें जो मनोवेदना उत्पन्न हुई, उनसे स्पष्ट है कि राजा विश्वसेन के हृदय में मानवता कहीं छिपी हुई है। तेजस्वी पुरुष ने युद्ध के परिणामों पर प्रकाश भी डाला। उसमें निहित सत्य को उसने जाना-पहचाना। इसी कारण उसने जनता के कल्याण के लिए अपने को अर्पित करने का निर्णय लिया और यही सही निर्णय है।''

राजा का मौन-भंग जैसे ही हुआ, बेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।
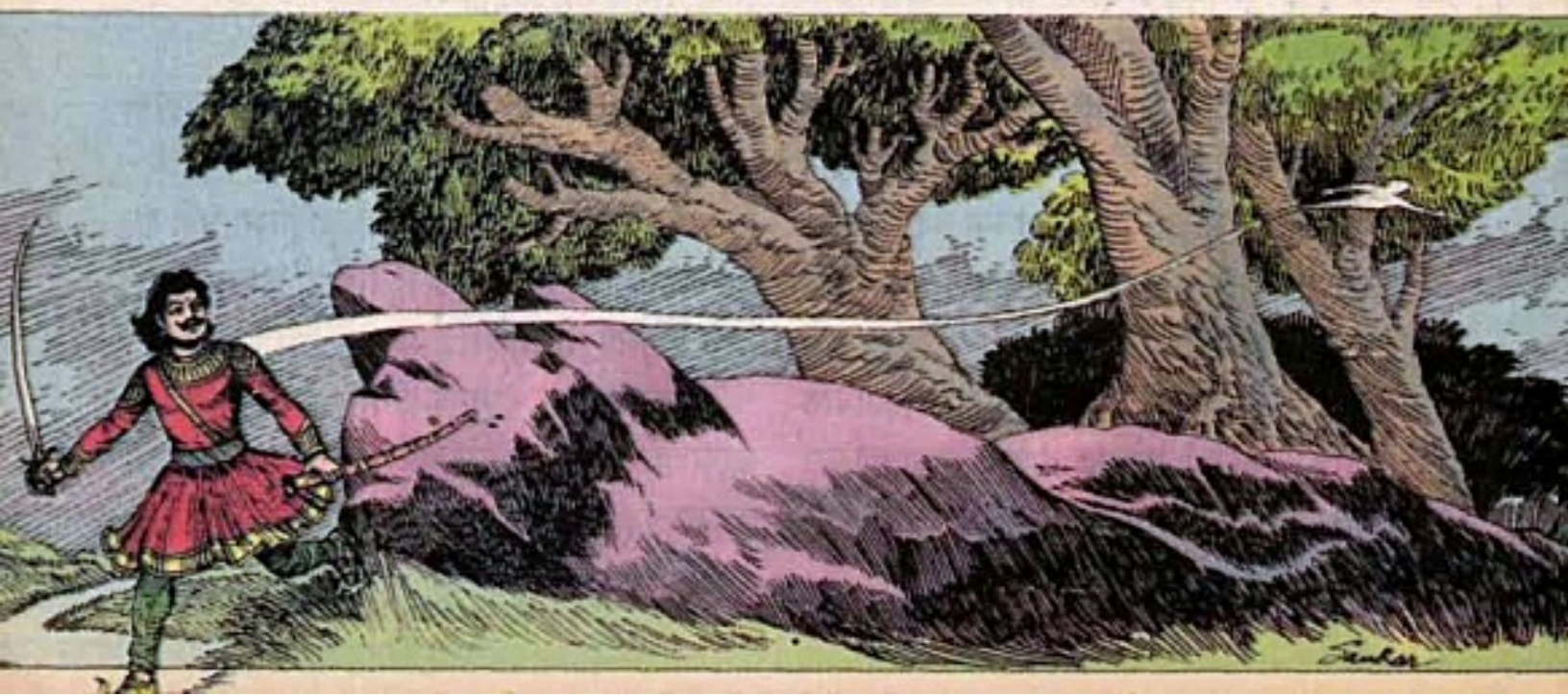
मालू ने
बदला लिया
कहानीकार
एम. शंकर राव
विजय नगर

वनपुर में एक सुबह मालू बड़ी तरो-ताज़गी से जागा और उसे भूख भी लगी थी।

नाश्ते के लिए वही केवल गाजर ही थे।
गाजर, गाजर! मैं तो इस गाजर से तंग आ गया हूँ।

वह कुछ चटपटा खाना चाहता था।
मुझे अच्छा खाना कहाँ मिल सकता है?

आह! क्या खुशबू है!
वह भोला भालू के रसोई में बन रहे खाने की खुशबू ले रहा था।

वह भोला के घर की ओर दौड़ पड़ा ....

..और जाकर फिल्थी लोमड़ी से टकरा गया।

तुमने मुझे चोट पहुँचायी, मैं तुम्हें जिंदा चबा जाऊँगी।
फिल्थी काफी गुस्से में थी और उसके दाँत मालू की ओर थे।

बेचारा मालू डर गया और फिल्थी से माफी माँगा।

मैं तुम्हें कैसे खाऊँ? कच्चा और भुना हुआ?
फिल्थी जिद्द में आ गयी कि वह मालू को ही दोपहर के खाने में खायेगी।

मालू ने फिल्थी को बेवकूफ बनाने का एक उपाय सोचा।

तुम अगर चाहो तो मुझे खा सकती हो। फिल्थी, मैं एक अच्छे कार्य के लिए मरने से नहीं डरता।

लेकिन क्या तुम रोज-रोज खरगोश खाते-खाते ऊब नहीं जाती हो?
क्यों नहीं तुम श्रीमती भोला का खाना खाती?

ऊँ हूँ.......
तुम ठीक कहते हो। एक नया डिश खाने में कोई हानि नहीं है।

लेकिन श्रीमती भोला का खाना हमें कैसे मिलेगा?

मालू अपनी योजना के लिए तैयार था।
मैंने उसके लिए एक योजना बनाई है। जैसा मैं कहूँ वैसा करने से हम श्रीमती भोला के घर खाना खा रहे होंगे।

मालू और फिल्थी डॉ. भोला के घर की ओर चल दिए। अचानक फिल्थी गिर पड़ी और नाटक करने लगी कि उसके पेट में दर्द है।

डॉ. भोला को मालू बुला लाया।
डॉक्टर, मेरी दोस्त बिमार है, क्या आप इसे देख लेंगे?
उसे मेरे घर ले आओ। मैं उसे कुछ गोलियाँ दे दूँगा।

यह तो अच्छा हुआ।
फिल्थी भोला के घर के एक कोने में बैठ गयी और मालू उसका इन्तज़ार करने लगा।

श्रीमती भोला लंच बना रही थी। फिल्थी तथा मालू की खुशी का ठिकाना नहीं था।

कुछ समय बाद भोला और उसकी पत्नी टहलने के लिए जंगल गए।
आह, यही समय है!

क्या बात है!
फिल्थी रसोई में गयी और खाने पर टूट पड़ी।

जब मालू एक निवाला खाने के लिए आता तो फिल्थी उसे डाँट देती।
लालची खरगोश! चले जाओ यहाँ से!

लालच कभी मीठा फल नहीं देती

समाप्त

साँप के वर

जयंता नंदा
सांबलपुर

सी. अभिषेक
हैदराबाद

उत्तर प्रदेश के रामपुर नामक एक छोटे-से गाँव में रमा नामक एक लड़की रहा करती थी। उसके बचपन में ही उसकी माँ गुज़र गई। सौतेली माँ उसे सताती रहती थी। सौतेली माँ की बेटी श्यामला भी बात-बात पर उसे गालियाँ देती रहती थी। घर का पूरा काम रमा को ही करना पड़ता था।

"अरी ओ, सुस्त लड़की ! कपड़े धोने को कहा तो बैठी-बैठी ऊँघ रही है? जल्दी काम पूरा कर। अभी बरतन धोने हैं, रसोई पकानी है, अपने बाप के लिए खाना खेत ले जाना है। उठ, महारानी की तरह आराम से बैठी है," सौतेली माँ से ऐसी कड़ुवी बातें हर दिन रमा सुनती रहती थी। वह इनकी आदी भी हो गयी। पर रमा कभी भी इसके विरोध में कुछ नहीं बोलती थी।

एक दिन अपने पिता के लिए खाना लिए खेतों से गुज़र रही थी। एक पेड़ से अचानक उसपर कुछ गिरा। दर्द के मारे वह रोने लगी। तब उधर से गुजरता हुआ एक साँप रुक गया और पूछा, "बिटिया, रोती क्यों हो?"

रमा ने आपबीती बतायी। तब साँप ने कहा, "मेरी सहायता करोगी तो तुम्हारी सारी तक़लीफ़ें दूर हो जायेंगी। मैं तेरी सहायता करूँगा।"

रमा ने कहा, "कहो, मैं कैसे तुम्हारी सहायता कर सकती हूँ?"

"मेरी बहन को कल पूजा में भाग लेने जाना है। इसके लिए उसे एक पुष्पमाला की ज़रूरत है। अच्छा होगा, तुम पुष्पमाला पिरोकर दो तो।"

रमा ने उसकी बात मान ली। इर्द-गिर्द के पौधों में जो फूल थे, उसने तोड़े और सुंदर पुष्पमाला बनाकर ले आयी। उसे देखते ही साँप बेहद खुश हुआ और बोला, "इस साँप की बात तुमने मान ली, धन्यवाद! मैं तुम्हें दो वरदान दूँगा। घर पहुँचते-पहुँचते तुम्हारा कायापलट हो जायेगा। बहुत सुंदर बन जाओगी। तुम्हारा कंठस्वर मधुर होगा। पर किसी को यह बात मालूम न हो कि मेरे वरदानों से तुममें यह परिवर्तन हुआ है।" यों कहता हुआ साँप पुष्पमाला लिए चला गया।

घर पहुँचते ही रमा की सुंदरता को देखते हुए एवं उसके मृदु मधुर कंठस्वर को सुनते हुए सौतेली माँ चकित रह गयी। उसने रमा से जानना चाहा कि यह कैसे संभव हुआ। पर रमा ने असली बात छिपायी और कहा कि पेड़ पर रहनेवाले एक भूत की सहायता से ऐसा हुआ है।

दूसरे दिन सौतेली माँ ने अपनी बेटी के हाथ में भोजन थमाया और खेत में काम पर लगे अपने पिता को दे आने को कहा। रास्ते में श्यामला को भी साँप दिखायी पड़ा। उसे मालूम नहीं था कि इसी साँप ने रमा को वर दिये। श्यामला तो समझती थी कि रमा को ये वर पेड़ पर रहनेवाले किसी भूत ने या भूतनी ने दिये होंगे। इसलिए जब साँप ने पुष्पमाला माँगी तब उसने अनसुनी कर दी और बिना कुछ कहे आगे बढ़ती गयी। उसपर नाराज़ होते हुए गालियाँ भी देती रही।

साँप नाराज़ हो उठा और कहा, "दुनिया में तुम जैसी बदसूरत और कोई नहीं होगी। तुम्हारी सूरत इतनी भयानक होगी कि देखते ही लोग तुम्हें

कोसने लगेंगे।"

घर लौटी बेटी श्यामला का विकृत रूप देखकर उसकी माँ को धक्का लगा। वह बेतहाशा रोने-धोने लगी। उसकी समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। सौतेली माँ का दुःख देखकर रमा भी दुःखी हो गयी। वह फिर से खेतों की तरफ़ गयी और साँप को देखकर उससे प्रार्थना की कि वह श्यामला के रूप को यथावत् करे। तब साँप ने कहा, "बिटिया, माँ और बेटी तुम्हें पल-पल पर सता रही हैं। फिर भी तुम चाहती हो कि तुम्हारी बहन का भला हो। सचमुच ही तुम बहुत ही अच्छे स्वभाव की हो। ठीक है, मैं तेरी इच्छा पूरा करूँगा।" थोड़ी देर तक सोचने के बाद साँप ने रमा से कहा, "बेटी, तुम्हारे उदार स्वभाव पर संतुष्ट होकर तुम्हें एक और वर दूँगा। अगले हफ़्ते किसी एक देश का राजा तुम्हारे गाँव से गुज़रनेवाला है। अपने मधुर कंठ से एक गीत गाकर सुनाओगी तो राजा तुमपर आकर्षित होगा। निकट भविष्य में युवरानी बनोगी।"

रमा घर लौट आयी। श्यामला को उसका पुराना रूप मिल गया। साँप के कहे अनुसार एक सप्ताह के अंदर ही उस देश का राजा किसी काम पर गाँव से गुज़र रहा था। यह खबर पाते ही गाँव के लोगों ने राजा के सम्मान में एक सभा का आयोजन किया। कार्यक्रम शुरू हो, इसके पहले रमा से प्रार्थना गीत गाने को कहा गया। रमा के गाये मृदु मधुर गीत को सुनकर राजा का दिल आनंद से डोल उठा। राजा ने बड़े प्यार से उसे अपने पास बुलाया। राजा ने उसके पिता से कहा कि मैं तुम्हारी पुत्री को गोद लूँगा और अपने साथ ले जाऊँगा। पर रमा ने इस प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहा, "अपने पिता, माँ और बहन को छोड़कर मैं अकेली राजधानी नहीं आऊँगी।"

राजा ने इसपर मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हारा पूरा परिवार तुम्हारे साथ राजधानी आयेगा। तुम्हारे माँ-बाप राजभवन में तुम्हारे साथ रह सकते हैं और अपना जीवन बिता सकते हैं। तुम ही इस राज्य की युवरानी बनोगी।"

इसपर रमा ने अपनी स्वीकृति दी। सौतेली माँ और श्यामला को अपने किये पर पश्चाताप हुआ। रमा से दोनों ने माफ़ी माँगी।

करुणा कठोर हृदयों पर भी विजय पाती है।

गधे को सबक सिखाया गया

प्राची सी. चंद्रभूषण
मुंबई

आशिष
मुंबई

सुभाष एक मुर्गी, एक कुत्ते के पिल्ले व एक गधे को पालता था। गधे को घर के पिछवाडे के खूँटे से बाँध देता था और वहीं उसे चारा खिलाता था। कुत्ते के पिल्ले को दरवाजे के पास ही छोड देता था।

सुभाष जैसे ही अपना काम पूरा करने के बाद घर लौटता था, पिल्ला अपनी पूँछ हिलाता था और उछलता-कूदता था और यों उसका स्वागत करता था। सुभाष भी बडे ही प्यार से पिल्ले को उठा लेता था और उसकी पीठ सहलाता रहता था। थोडी देर उसके साथ खेल भी लेता था। उसे रोटी के टुकडे खिलाता था। पिल्ला उन्हें खा लेने के बाद बडे ही उत्साह के साथ घर भर में घूम-फिरकर आता था।

गधा दिन भर मेहनत करता था। घर से खेत तक वह खेती की सामग्री ढोकर ले आता था। जंगल से लकडियाँ ढोकर ले आता था। मालिक कभी-कभी कोल्हू चलाने के लिए उसका उपयोग करता था।

अपनी दुस्थिति पर गधे को कभी-कभी बहुत दु:ख होता था। वह अपने ही आप सोचने लगता था, ''मुझे कितने कष्ट सहने पडते हैं। एक पल का भी आराम नहीं मिलता। थक जाता हूँ, पर लाचार हूँ। वह पिल्ला देखो। उसे कोई भी काम करना नहीं पड़ता। यजमान का प्यार सदा उसे मिलता रहता है। कितना सुखी है वह!'' उसमें पिल्ले के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गयी। उसने एक दिन शाम को पिल्ले को अपने पास बुलाया और कहा, ''तुम तो एक भी काम करते नहीं हो, फिर भी तुम्हें अच्छा खाना मिलता है। मुझे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। जब देखो, बोझ ढोना पडता है। फिर भी मालिक मुझे घास खिलाता है, जिसमें कोई स्वाद ही नहीं होता। क्या यह अन्याय कभी भी खतम नहीं होगा? इसका अंत नहीं होगा?''

''यह न समझना कि मेरी ज़िन्दगी आराम से कट रही है। रात भर मुझे घर की रखवाली करनी पडती है। तभी मुझे आजादी मिलती है। दिन भर आंगन में बंधा रहता हूँ और तुम? तुम तो दिन भर आजाद रहते हो। दुनिया को देखते हो। मैं तो इस भाग्य से वंचित हूँ। मालिक हमेशा तुम पर नजर रखते हैं। इससे बडा और क्या भाग्य चाहिए?''

फिर भी गधे का संदेह जैसा का तैसा बना रहा। पिल्ले की सफाई से वह संतुष्ट नहीं हुआ। उनकी बातचीत को सुनती हुई मुर्गी ठहाका लगाकर हँसने लगी और कहने लगी, ''मित्रों, हमें अपने कामों को सुचारू रूप से करना चाहिए। दूसरों से तुलना करके अनावश्यक दु:खी होना नहीं चाहिए। मैं अंडे देती हूँ। उन्हें मालिक ले जाता है।

अंडे देने तक ही मेरी जिम्मेदारी है। उस जिम्मेदारी को मैं बखूबी निभाती हूँ। भला किसी और की तरह मौज उड़ाने के लिए अधीर रहूँ? मुझे मालूम है कि मैं अंडा देना बंद कर दूँगी तो मालिक मुझे काटेंगे और खा लेंगे। औरों को देखकर ईर्ष्या करने से क्या फ़ायदा होगा?'' मुर्गी की ये बातें गधे को बिल्कुल अच्छी नहीं लगीं। पिल्ले के प्रति उसकी ईर्ष्या दिन-ब-दिन बढ़ने लगी। ईर्ष्या उसमें इतनी बढ़ गयी कि वह किसी एक जगह पर खड़ा भी नहीं हो पाता था। एक दिन अचानक पूँछ हिलाता हुआ मालिक के घर के अंदर घुस गया। बैठे हुए मालिक के चारों ओर घूमता रहा। उसके पैरों को चाटने की कोशिश की। इतना ही नहीं, उसने मालिक की गोद में बैठने का भी प्रयत्न किया और औंधे मुँह गिर गया। उठकर खड़ा हो गया और पिल्ला भी जो भी किया करता था, करता रहा। मालिक का प्रेम पाने के लिए यथासंभव चेष्टाएँ उसने कीं।

उसकी इन चेष्टाओं से मालिक नाराज़ हो उठा। चूँकि गधा घर भर में इधर-उधर घूमता रहा, इसलिए घर भर की चीजें तितर-बितर हो गयीं। टूट गयीं। कुर्सियाँ या मेज उथल-पुथल हो गये। उसके पैरों की गंदगी के कारण मालिक के कपड़े गंदे हो गये। इस कांड में मालिक थोड़ा-सा घायल भी हुआ। गधे की इन चेष्टाओं को देखते हुए और मालिक को असहाय स्थिति में पाकर दो नौकर दौड़े-दौड़े आये। उन्होंने लाठियों से गधे की ऐसी-तैसी कर दी। उसे खूब पीटा और आखिर उसे खूँटे से बांध दिया।

गधा दर्द के कारण रेंकता रहा और अशक्त होकर बिना हिले-डुले पड़ा रहा।

खूब अंधेरा छा जाने के बाद पंखों की फड़फड़ाहट की आवाज़ सुनकर गधा उस ओर मुड़ा। मुर्गी उसके पास आकर कहने लगी, ''मैंने तुमसे बार-बार बताया था कि ईर्ष्यालु मत होना। ईर्ष्या से तुम्हें ही नुक़सान पहुँचेगा। पर तुमने मेरी बातें अनसुनी कर दीं। अब तो तुम्हें इसका अनुभव हो चुका है। दूसरों को देखकर उन्हीं की तरह रहने या बनने की कोशिश खतरनाक है। हम अपने कामों को सही तरह से करते रहें, इसी में हमारी भलाई है।''

गधे ने अब मुर्गी की बातों में छिपे सत्य को जान लिया, महसूस किया। 'हाँ' के भाव में उसने अपना सिर हिलाया।

ईर्ष्या विनाश का मूल है।

एकाकी पेड़

कार्तिक रामास्वामी
चेन्नै

आशिष जी. शेट्टी
मुंबई

वह २९९९ वाँ साल है। तारीख़ ३१ दिसंबर है। शाम के आठ बजे। कल ही नई सहस्राब्दि का नया साल शुरू होगा। रात की बेला में लंदन का आकाश आतिशबाजियों से देदीप्यमान है। रॉकी खिडकी के पास बैठे सोच में मग्न है। माँ, ने उसे इस स्थिति में देखकर पूछा, "रॉकी, किसके बारे में सोच रहे हो?"

"माँ, मेरी कला की अध्यापिका ने कम्प्यूटर में पेड का चित्र बनाने को कहा। यह पेड़ क्या होता है, माँ? मुझे मालूम नहीं कि यह होता कैसे है?" रॉकी ने कहा।

"रॉकी, पहले यहाँ से जाओ और प्रोटीन व विटामिन की गोलियाँ खाकर आओ। फिर मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगी" रॉकी की माँ ने कहा।

रॉकी दोनों गोलियाँ खाकर वापस आ गया और माँ के सामने बैठ गया। उसने कहा, "माँ, अब पेड़ के बारे में बताना।"

"बेटे, तुम्हारे परदादा ने पेड़ों के बारे में मुझसे बताया। किन्तु अपने जीवन-काल में कभी भी मैंने एक भी पेड़ नहीं देखा। शायद तुम्हारे परदादा ने भी देखा न हो। परंतु अब लंदन के वस्तु संग्रहालय में एक पेड़ है। बहुत समय के पहले उसका तना होता था, टहनियाँ होती थीं, पत्ते होते थे। पत्तों का रंग हरा होता था। तना भूरे रंग का होता था। हज़ारों सालों के पहले दुनिया भर में तरह-तरह के पेड़ हुआ करते थे। दुर्भाग्यवश अब एक भी पेड़ नहीं रहा। वस्तु संग्रहालय में नमूने का एकमात्र पेड़ रह गया है। सच कहा जाए तो पेड़ों के न होने पर वर्षा नहीं होती। परंतु अब विज्ञानवेत्ता कृत्रिम वर्षा बरसा रहे हैं। इसके लिए उन्होंने नये मार्गों को खोज निकाला है। तुम तो जानते ही हो कि पानी

के बिना मनुष्य का जीना असाध्य है।'' माँ ने कहा।

''मैंने एक पुरानी किताब में पढ़ा था कि पूर्वकाल के मनुष्यों में शाकाहारी और मांसाहारी नामक दो तरह के लोग रहा करते थे। क्या यह सच है?'' रॉकी ने पूछा।

''हाँ बेटे, यह सच है। शाकाहारियों का मतलब है, वे लोग जो वृक्ष से संबंधित आहार ही खाते थे। अपने आहार के लिए जो लोग जंतुओं पर निर्भर करते हैं, वे मांसाहारी कहलाते हैं।'' माँ ने कहा।

''ऐसी बात है!'' आश्चर्य प्रकट करते हुए रॉकी ने कहा।

''यहाँ तुम्हें एक और बात बतानी होगी। लंदन के वस्तु संग्रहालय में जो पेड़ है, न ही उसमें फूल उगते हैं न ही फल। इसका यह मतलब हुआ कि उसकी उत्पत्ति की शक्ति नहीं रही। जानते हो, ऐसा क्यों होता है? उस पेड़ की उम्र हो गयी। वह भी एक ही पेड़ रह गया, इसलिए उसकी पुनरुत्पत्ति संभव नहीं। एक ही पेड़ के होने से उसकी यह शक्ति छिन जाती है। उस पेड़ में फूल उगने हों, उसे फल देने हों तो हवा या कीड़े-मकोड़ों को परंपराग संपर्क के लिए सहायता पहुँचानी होगी। जो फल उसमें लगे हैं, उन्हें पकना होगा। पके उन बीजों को पक्षियों को सुदूर ले जाना होगा। वहाँ बीज उगने होंगे। पुनरुत्पत्ति के लिए यह सब कुछ होना ज़रूरी है। एकाकी पेड़ से यह संभव नहीं'' माँ ने कहा।

''अच्छा, माँ! अब बताइये कि बरगद के पेड़ों से क्या फ़ायदा होता है?'' रॉकी ने पूछा।

''सही समय पर वर्षाएँ होंगीं। प्रवाह में मिट्टी बह न जाए, इसमें सहायता पहुँचाते हैं और रक्षा करते हैं। पर्यावरण की रक्षा में सहायक साबित होते हैं। ये पेड़ पक्षियों और जंतुओं को आश्रय देते हैं। इन पेड़ों की लकड़ियों का उपयोग हम तरह-तरह से कर सकते हैं'' यों माँ ने पेड़ों के उपयोग को लेकर बताया।

तब तक ध्यान से सुनते हुए रॉकी ने पूछा, ''माँ, बहुत बातें जान लीं। अब तुम लैपटाप में पेड़ का चित्र बनाकर देना।'' ''हाँ अवश्य। अभी बनाती हूँ। कल ही तुम्हें लंदन के वस्तु संग्रहालय में ले जाऊँगी और वह एकाकी पेड़ दिखाऊँगी।'' माँ ने कहा।

''वाह, कितनी अच्छी बात कही माँ तुमने।'' वह खुश होता हुआ बोला।

पेड़ों की रक्षा करेंगे भावी पीढ़ियों के लि[ए] सुरक्षा की व्यवस्थ[ा] करेंगे।

चाबी खोज निकालिये
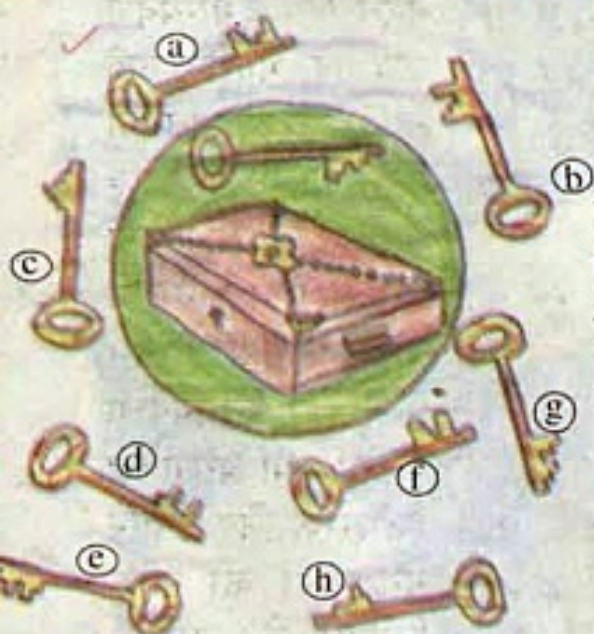
वृत्त के अंदर की चाबी पेटी को खोल सकती है। पर तुम क्या दूसरी चाबी खोज पाओगे?

- ए. अनिता रानी
थाने

रंग–बिरंग

जब हम लोगों ने बच्चों से चित्र मंगवाये, यह निर्णय लेने के लिए कि कौन इस विशेषांक के लिए चित्र बना सकता है तो हमें अंदाजा नहीं था कि बच्चे इस प्रतियोगिता में इतना बढ़-चढ़कर भाग लेंगे। पूरे देश से हमें डाक द्वारा बहुत सारी प्रविष्टियाँ मिलीं। हमारा पूरा कार्यालय रंग-बिरंगी चित्रों से भर गया। इन सभी सुन्दर चित्रों में से हमें यह निर्णय लेना मुश्किल हो गया कि कौन लोग हमारी कहानियों के पेंटिंग बनायेंगे। हम लोगों ने चेन्नई में भारत के अन्य भागों से पाँच प्रतियोगियों को बुलाया। किसी कारणवश दो प्रतियोगी चेन्नई नहीं आ सके। लेकिन हम उनके द्वारा बनाए गए चित्र यहाँ पर दे रहे हैं। जिससे हमें चित्रकारों को चुनने में आसानी हुई।

यहाँ हमारे नन्हें चित्रकारों के चित्र हैं जो हमारे कार्यालय में लिए गए और उनके द्वारा बनाए गए चित्र भी।

अभिशेक पी.
हैदराबाद

उनका चित्र

अन्जुल लुनिया
मुम्बई

उनका चित्र

आशिष शेट्टी

मुम्बई

उनका चित्र

(जो लोग चेन्नई
नहीं आ सके)

प्रीतम दास

उत्तर २४-परगना

रश्मि रंजन दिबाता

कटक

विशेष प्रस्तुति

हमें सबसे कम आयु के दो बच्चों की पेंटिंग्स को यहाँ पर प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है। जिन्होंने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

एस.वी.एस. भीमेश्वर,
मुम्बई, ७ वर्ष

श्रुति चौधरी,
हैदराबाद, १० वर्ष

क्या
बात है !

बुरा करनेवालों का बुरा होगा

मधुकर शेट्टी
मंगलूर

बहुत पहले की बात है। जंगल में एक बड़े वृक्ष पर घोंसला बनाकर कबूतरों का एक जोड़ा रहा करता था। दोनों दिन के समय खाने के लिए आवश्यक चीज़ें इकट्ठा करते थे और प्रशांत जीवन बिताते थे। उसी वृक्ष के नीचे एक साँप रहता था। खुश कबूतर के उस जोड़े को देखकर ईर्ष्या से वह जलता था। वह चाहता था कि किसी भी हालत में उनकी खुशी छीन लूँ। वह मौके की ताक में था और दिन गिन रहा था। मादा कूबतर ने घोंसले में दो अंडे दी। वे दोनों यथावत् आहार की खोज में चले गये। यह मौका पाते ही साँप तेजी से वृक्ष पर चढ़ता गया और घोंसले में से दोनों अंडों को नीचे गिरा दिया। वे अंडे फट गये। फिर वह वृक्ष से नीचे उतरा और आराम से सो गया। अब उसका मन संतृप्त था।

थोड़ी देर बाद दोनों कबूतर वापस लौटे। घोंसले को खाली पाकर मादा कबूतर का दिल टूट गया। वह बिलख-बिलखकर रोने लगी। पुरुष कबूतर उसके दु:ख को दूर नहीं कर पाया। उसके अशांत मन को शांत नहीं कर सका। कोटर से धीरे से आते हुए साँप को देखकर मादा कबूतर ने उससे कहा, "मेरा घर सूना हो गया। मैं बरबाद हो गयी। मेरे दोनों अंडे बेकार हो गये। सबेरे से तुम यहीं थे। क्या तुमने किसी जंतु को आते हुए देखा? क्या तुमने उस दुष्ट को देखा, जिसने मेरा सर्वनाश कर दिया? मुझे कहीं का न छोड़ा? पता नहीं, मेरे अंडों पर क्या गुज़री होंगी?"

कबूतरी को रोते हुए देखकर साँप मन ही मन खुश होने लगा। उसे इस बात पर तसल्ली हुई कि कबूतरी ने उस पर शक नहीं किया। अब साँप सोचने लगा कि इस सचाई को वे जान जाएँ, इसके पहले ही यह अपराध किसी पर थोपना चाहिए। क्षण भर में वह निर्णय पर आया और कबूतरी से कहा, "देखो, वहाँ तीसरा जो पेड़ है, उस पर एक गिद्ध रहता है। थोड़ी देर पहले मैंने उसे तुम्हारे घोंसले के पास देखा। उसकी चोंच में अंडे थे। मुझे देखते ही वह गिद्ध कहने लगा, "ये कबूतर मेरी उंगली भर भी नहीं है, इनके दो-दो अंडे ! मैं भी देखता हूँ कि इनके संतान कैसे होंगे? मैंने बारंबार

उससे कहा कि अंडे मत फोड़ो। पर क्या करूँ? कमज़ोर हूँ न। उसे ऐसा करने से रोक नहीं पाया। उस गिद्ध ने उन अंडों को धड़ाम् से नीचे गिरा दिया। बहन, मैं कह नहीं सकता, उस समय मेरा मन कितना दुःखी हुआ।'' साँप ने झूठे आँसू गिराते हुए कहा।

उसी पेड़ की एक और टहनी पर वहीं गिद्ध बैठा हुआ था और साँप के कही बातें ध्यान से सुन रहा था। पर साँप को यह मालूम न था। साँप की इन झूठी बातों पर गिद्ध नाराज़ हो उठा और पेड़ पर से उड़ा। साँप को अपने नाखूनों से पकड़ लिया और तेज़ी से ज़मीन पर फेंक दिया। साँप तुरंत मर गया। इसके बाद गिद्ध ने कबूतरों से कहा, ''मैंने यह काम नहीं किया। नीच स्वभाव के उस साँप ने जान-बूझकर मुझपर निंदारोपण किया। उसी ने ईर्ष्या के वश में आकर अंडों को घोंसले से नीचे गिरा दिया होगा।''

कबूतरों को लगा कि गिद्ध की बातों में सचाई है। समय के साथ-साथ उन्होंने अपना दुःख भी भुला दिया। मादा कबूतर ने फिर से कुछ अंडे दिये। उनसे सुंदर बच्चे निकल आये। सब मिलकर सुखी व शांत जीवन बिताने लगे। पड़ोसी साँप से सदा के लिए मुक्ति पाने पर भगवान को अपनी कृतज्ञता जतायी।

तीन अध्यापक

तीन अध्यापक पैदल जा रहे थे। उनके बग़ल में ही जा रही एक महिला का बटुआ किसी ने छीन कर भागने लगा। तेलुगु भाषा-भाषी अध्यापक चिल्लाने लगा, ''दोंगा, दोंगा।'' हिन्दी अध्यापक ''चोर, चोर'' कहकर चिल्लाने लगा। गणित अध्यापक थोड़ी देर तक सोचने के बाद चिल्लाने लगा, ''४२०, ४२०''।

- एम.सी. निकिलेश, बंगलूर.

खरीदने आया आदमी:- ''क्या तुम दावे के साथ कह सकते हो कि यह कुत्ता विश्वासपात्र है?''

कुत्तों के व्यापारी ने कहा, ''हाँ, दावे के साथ कह सकता हूँ। इसे पाँच बार बेचा था। यह पाँचों बार तुरंत वापस आ गया।

- प्रशांत पांडे, मुंबई।

जो बोते हैं वही पाते हैं।

जादुई बाँसुरी

सार्थक शोभन शतपथि
कटक

गरीब सुमन की उम्र थी चौदह साल। बूढ़ी दादी के अलावा उसका दुनिया में कोई और नहीं था। दादी बहुत बूढ़ी हो गयी थी, इसलिए वह कोई भी काम कर नहीं पाती थी। जब बदन में बल था, तब जंगल जाती, लकड़ियाँ काटकर लाती और उन्हें बेचकर अपने पोते को थोड़ा-बहुत खिलाती थी। ऐसा नहीं हो पाता था तो दादी और पोता भूखे रहते थे। बेचारे वे करें भी क्या? उन्हें अब इसकी आदत भी पड गयी। सुमन कोई न कोई काम करके अपनी दादी की सहायता करना चाहता था, लेकिन कोई भी उसे काम नहीं देता था। क्योंकि काम करने की उसकी उम्र नहीं थी। अपनी असहायता पर वह मन ही मन कुढ़ता था।

एक दिन वह जंगल में एक पेड के नीचे बैठा था। अपनी दुर्स्थिति पर रोते हुए वह नींद की गोद में चला गया। अचानक किसी ने उसकी पीठ थपथपायी तो चौंकते हुए उसने आँखें खोलीं। सामने एक सुंदर देवी खडी थी। "इधर कुछ दिनों से मैं तुम्हें देखती आ रही हूँ। तुम हमेशा उदासीन रहते हो। कौन-सा ऐसा कष्ट है, जिसके कारण तुम्हें इतना दुःख सहना पड रहा है। तुम्हारे कष्टों को दूर करने के लिए भगवान ने मुझे यहाँ भेजा।" देवी ने कहा।

चकित सुमन एक क्षण भर तक कुछ बोल नहीं सका। फिर संभल गया और अपने कष्ट देवी को सुनाया।

सुमन के कष्टों का विवरण जानकर देवी के दिल में दया पैदा हो गयी। दादी को सहायता पहुँचाने की उसकी सदिच्छा पर वह बहुत प्रसन्न हुई। उसने उसे बाँसुरी देते हुए कहा, "यह एक जादुई बाँसुरी है। ग़लतियाँ करनेवालों के सामने तुम इसे बजाओगे तो वे लोग शिलाएँ बन जाएँगे। इसे दूसरी बार बजाओगे तो वे पहले के जैसे मानव बन जायेंगे। जब तक तुम न्यायबद्ध और धर्मबद्ध रहोगे, तब तक तुम्हारे लिए यह उपयोगी साबित होगा।"

सुमन को बेहद खुशी हुई। दूसरों का भला करने के उद्देश्य से वह वहाँ से निकला। थोड़ी दूर जाने के बाद उसे तेज़ी से आते हुए घोड़ों के टाप की आवाज़ें सुनायी पडीं।

वह तुरंत झाडियों के पीछे छिप गया और झांककर देखने लगा। लुटेरे एक सुंदर युवती को घोड़े पर जबरदस्ती ले आ रहे थे। सुमन ने अनुमान किया कि वह उस राज्य की युवरानी होगी। इसका यह मतलब हुआ कि लुटेरे उसका अपहरण करके उसे ले जा रहे हैं। सुमन ने निर्णय कर लिया कि अब उसका क्या कर्तव्य है। उसने तुरंत बांसुरी निकाली और बजायी। बस, उसी क्षण लुटेरे शिलाओं में बदल गये। सुमन युवरानी के पास आया और उससे विनती की कि वह राजधानी जाकर कुछ सैनिकों को यहाँ भेजे।

युवरानी घोड़े पर सवार होकर राजधानी गयी। जो हुआ, राजा को बताया। राजा कुछ सैनिकों को साथ लेकर युवरानी सहित वहाँ पहुँचा, जहाँ सुमन है। उन्हें देखते ही सुमन ने फिर से बांसुरी बजायी। शिला बने लुटेरे अब असली रूप में प्रकट हुए। सैनिकों ने उन्हें क़ैद कर लिया। युवरानी और राजा ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और राजधानी आने के लिए उसे आमंत्रण दिया। सुमन उनके साथ राजधानी गया। राजा को लगा कि न्यायबद्ध सुमन महिमामयी बाँसुरी की सहायता से शासन संबंधी कार्यों में राज्य को बहुत लाभ पहुँचा सकता है और उपयोगी भी साबित होगा।

दूसरे दिन राजा ने सुमन को बुलवाया और कहा, ''इधर कुछ दिनों से गहने और धन कोई खज़ाने से लूट रहे हैं। प्रहरी उन्हें पकड़ नहीं पा रहे हैं। तुम अपने जादुई बाँसुरी से उन्हें पकड़ने की कोशिश करना।''

''ऐसा ही करूँगा प्रभु, पर इस विषय में आपको मेरे साथ रहना होगा और मेरी सहायता करनी होगी'' सुमन ने कहा।

राजा ने यह शर्त मान ली।

उसी दिन रात को, किसी की जानकारी के बिना राजा और सुमन खज़ाने के समीप छिप गये। आधी रात को खजाने का अधिकारी और दलनायक मिलकर आये और निधियाँ लूटने लगे। राजा यह दृश्य देखकर अवाक् रह गया। सुमन ने जादुई बाँसुरी बजाया। चोरी करने आये दोनों शिलाओं में बदल गये। इतने में सैनिक वहाँ आये। राजा ने सुमन से एक और बार बाँसुरी बजाने के लिए कहा। बाँसुरी बजाते ही अधिकारी और दलनायक असली रूप में प्रकट हुए। दोनों शरम के मारे सिर झुकाकर खड़े हो गये। सैनिक दोनों को क़ैद करके वहाँ से ले गये।

सुमन की सहायता पर राजा बहुत खुश हुआ और राजभवन में ही बस जाने का आग्रह किया। उसने दादी की बात बतायी तो राजा ने उसे वहीं बुलवा लिया। सुमन की शिक्षा का भी प्रबंध किया।

युवरानी विवाह के उपरांत उस राज्य की रानी बनी। सुमन उसका प्रधान सलाहकार नियुक्त हुआ। योग्य व उचित सलाहें देते हुए राज्य में शांति व सुस्थिरता की स्थापना में वह भरपूर सहायता पहुँचाता रहा। धर्मबद्ध शासन वहाँ होने लगा।

अच्छी बुद्धि जीवन की नींव है।

सच्चा मित्र

सबीना यास्मिन
उत्तर २४ परगणास

सुंदर कोलकत्ता नगर के समीप का एक छोटा-सा गाँव। उस गाँव में जाफर नामक लड़का अपनी माँ लज्जो बेगम और बहन नीलिमा के साथ रह रहा था। यह उम्र उसके खेल-कूद की थी। पर इस छोटी-सी उम्र में ही उसने परिवार की जिम्मेदारियाँ संभाली। जब वह पाँच साल का था। उसके अब्बा गुज़र गये। तब से लेकर वह अपने परिवार की गाड़ी को खींचता चला आ रहा था।

सूर्योदय के पहले ही जाफर नगर के संपन्न गृहस्थ रमापति के घर में काम करने निकल पड़ा। नगर में फूलों के पौधों के बीजों को उसने अपनी थैली में डाल लिया और सोचने लगा, "इस काम का मिलना मेरा सौभाग्य है। खान चाचा से बाग़वानी नहीं सीखता तो मेरी कितनी बुरी हालत होती। रमापति बाबू क्या मुझे इस काम पर लगाते?" वह यों सोचते हुए आगे बढ़ता गया और कृपालु रमापति बाबू और उनकी पत्नी की याद की। उनके दयालु स्वभाव की मन ही मन प्रशंसा करने लगा।

रमापति बाबू, दरवाज़े पर खड़े उसी का इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें देखते ही मंद मुस्कान भरते हुए जाफर ने कहा, "नमस्कार, बाबूमोशाय। जल्दी ही हमारा बाग़ हरा-भरा हो जायेगा, है न?"

तभी उसकी नज़र मालिक के बग़ल में खड़े लड़के पर पड़ी। रमापति बाबू ने यह भाँपा और कहा, "जाफर, यह मेरा बेटा अर्जुन है। नगर के एक स्कूल में पढ़ रहा है। आज ही यहाँ आया है। कुछ और हफ़्ते यहीं रहेगा। तुम इसे 'छोटा बाबू' कहकर पुकार सकते हो।" फिर अपने बेटे की ओर मुड़कर कहा, "यह जाफर है। हमारे बाग़ में काम करता है।

दोनों लड़कों ने एक दूसरे को देखा। इतने में रमापति ने अपने बेटे से कहा, "अर्जुन, अंदर जाना। सबेरे मैंने जो किताब दी, ध्यान से पढ़ना। मैं अभी आया।" फिर वे बाग़ से संबंधित कामों के बारे में जाफर से बातें करने लग गये। तब अर्जुन ने कहा,

''पिताजी, मैं जाफर से बातें करने के बाद जाऊँगा।'' पर रमापति ने ज़ोर देकर कहा, ''मैंने जो कहा, करो। अंदर जाओ।''

अर्जुन अनिच्छापूर्वक अंदर चला गया।

जाफर ने मालिक की कही बातें सुन तो लीं पर अर्जुन को देखकर उसका मन आनंद से उमड़ रहा था। जब वह अंदर जाने लगा, उसका सारा आनंद जाता रहा।

जाफर ने दिन भर कड़ी मेहनत की। लेकिन मन में तरह-तरह के विचार लहरों की तरह उछल-कूद करने लगे। वह सोचने लगा, ''अर्जुन मेरी ही उम्र का है। फिर भी कितना सुंदर और शालीन दिखता है। उससे बात करने की बड़ी इच्छा है। किंतु ऐसे संपन्न लड़कों से बात करना, उनसे दोस्ती करना मेरे लिए क्या मुमकिन है? दोनों के बीच में गहरी खाई है। काम किये बिना मेरा पेट नहीं भरता। ग़रीबी का यह तक़ाजा है। अर्जुन ठहरा अमीर। मैं तो उसका सेवक हूँ। वह मालिक है और मैं...'' यों वह सोच में पड़ गया।

उस दिन शाम को जब वह घर लौटने निकल रहा था, तब अर्जुन उसी की तरफ़ हंसता हुआ आ रहा था। इसपर जाफर को बड़ा आश्चर्य हुआ।अर्जुन ने कहा, ''जाफर, सबेरे ही मैं तुमसे बात नहीं कर सका, इसका मुझे बड़ा खेद है। तुमसे एक बात पूछने आया हूँ।''

जाफर ने कहा, ''कहिए।''

''क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?'' कहकर पास आकर उसने उससे हाथ मिलाया।

जाफर निर्णय नहीं कर पाया कि क्या कहे। वह खड़ा रह गया। उसकी चुप्पी को स्वीकृति मानकर अर्जुन ने कहा, ''जाफर, मैं अब बहुत खुश हूँ। मैं अच्छे दोस्तों के लिए तड़प रहा हूँ। मेरा विश्वास करो, स्कूल में या छात्रावास में मेरा कोई दोस्त ही नहीं है।'' दोनों में यों बातें होती रहीं। धीरे-धीरे मैत्री की कली खिलती गयी। वे दोनों साथ मिलकर खेलने भी लगे। लेकिन अपने बाग़ में काम करनेवाले लड़के और अपने बेटे के बीच में जो स्नेह बंधन बंधता जा रहा था, उसे उसकी माँ सावधानी से देख रही थी। अपने माँ-बाप के मित्रों के बच्चों से खेलना अर्जुन

को क़तई पसंद नहीं था। इस विषय को लेकर माँ ने अर्जुन को सावधान किया। तब अर्जुन ने कहा, ''माँ, तुम्हीं तो कहती थी कि अर्जुन बड़ा अच्छा लड़का है। उसे मैं बहुत चाहता हूँ।''

यो दिन गुज़रते गये। एक दिन अर्जुन ने जाफ़र का गाँव देखने की इच्छा जाहिर की। दोनों मित्र तुरंत पैदल निकल पड़े। जाफर की माँ और बहन ने बड़े प्यार से अर्जुन से बातें कीं। उसके प्यार पर उन्हें बेहद खुशी हुई। उनके परोसे नाश्ते को उसने बड़े प्यार से खाया। उसे

मैत्री के बीच न रुकावटे हैं न ही आभाव हैं।

बहुत अच्छा भी लगा। चारों ने मिलकर पूरा दिन बड़े ही आनंद के साथ गुजारा। "अर्जुन, देर हो रही है। अब हम निकलेंगे तभी सूर्यास्त तक तुम्हारे घर पहुँच सकते हैं। चलो निकलते हैं" जाफर ने कहा।

जब दोनों लौट रहे थे तब जाफर को लगा कि अर्जुन को गाँव ले जाने के अपराध में शायद उसके पिताजी नाराज़ हो जाएँ और खरी-खोटी सुनाएँ। चूँकि अचानक निकल चुके थे, इसलिए अर्जुन के माँ-बाप से भी अनुमति नहीं ली।

हाँ, अवश्य ही ग़लती हो गयी। इस पर सोचते हुए उसे डर लगने लगा।

जाफर का अंदाजा सही निकला। अर्जुन के न लौटने के कारण उसके माता-पिता बहुत चिंतित थे। दोनों को आते हुए देखकर रमापति बाबू की नाराजगी की बांध टूट गयी। वे आग बबूला होते हुए जाफर से बोले, "कहाँ से आ रहे हो ? मुझसे एक भी बात कहे बिना तुम मेरे लड़के को कहाँ ले गये? तुमने इतनी जुर्रत कैसे की? तुमने क्या सोच रखा है, क्या समझ रखा है? आगे से अपनी सूरत मुझे न दिखाना।"

क्षण भर के लिए चुप्पी छा गयी। अर्जुन ने धीमे स्वर में कहा, "बाबा, इसमें जाफर की कोई ग़लती नहीं है। मैं ही उसका गाँव देखना चाहता था, इसीलिए उसे लेकर उसके गाँव गया। कृपया उसे काम पर न आने मत कहियेगा। बाबा, जाफर को काम से मत निकालिये।"

फिर भी उसके पिता ने उसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। जाफर पर आग बरसाते हुए घर से निकाल दिया। अपने पिता के किये काम पर अर्जुन जोर-जोर से रोने लगा। मालिक ने जो भी गालियाँ दी, जाफर चुपचाप सुनता रहा। उसने मुँह नहीं खोला। मौन, वह वहाँ से चला गया।

रो-रोकर अर्जुन बेहोश होकर गिर गया। उसकी

राजु :- जानते हो, कौन बलवान आदमी है?

रवि :- यातायात का पुलिसवाला। एक ही हाथ से सभी वाहनों को रोक लेता है।

- विजयेंद्र सिंह, कोटा

को बुलाया।

डाक्टर चटर्जी आये। अर्जुन की जांच की। वह तीव्र बुखार से पीडित है। बदन जल रहा है। डाक्टर ने इंजेक्शन दिया और दवाएँ देकर चला गया। दूसरे दिन तक बुखार तो कम हो गया पर अर्जुन ने आँखें नहीं खोली। बीच-बीच में वह बड़बड़ा रहा था। डाक्टर ने जाँच के बाद कहा, ''रमापतिबाबू, लगता है मानसिक रूप से इसे बडा धक्का पहुँचा है।''

अर्जुन बार-बार कहने लगा, ''बाबा, जाफर को मत निकालिये।'' तीनों थोड़ी देर तक असहाय होकर देखते रहे।

रमापतिबाबू को बगल में ले जाकर डाक्टर ने कहा, ''अर्जुन की तबीयत सुधरे, इसके लिए जरूरी है कि आप जाफर को यहाँ बुला लें।''

पत्नी से कहे बिना रमापति बाबू जाफर के गाँव गये। जाफर को देखते ही उन्होंने कहा, ''मुझे माफ कर बेटे। नाराजी के मैं वश हो गया और जो मुँह में आया, कहता रहा। तुम्हारा अपमान किया। अर्जुन तुम्हें देखना चाहता है। तुम्हीं अभी मेरे साथ चलना होगा।'' उन्होंने जाफर की माँ और बहन को भी अपने साथ आने के लिए कहा। तीनों तुरंत निकल पड़े।

जाफर, अर्जुन की बगल में खड़ा हो गया और कहने लगा, ''अर्जुन, मैं जाफर हूँ। तुम्हीं से मिलने आया हूँ। आँखें खोलो, मुझे देखो, बंधु अर्जुन।'' उसकी आवाज़ में प्यार भरा हुआ था।

अर्जुन ने अपने मित्र का कंठस्वर पहचान लिया और धीरे से आँखें खोली। जाफर ने फिर से बुलाया। अब अर्जुन ने अपनी आँखें और ज़्यादा खोलीं। जाफर को देखकर बैठने का प्रयत्न किया। दोनों मित्रों ने एक दूसरे का हाथ पकड लिया। यह दृश्य

इस घटना के बाद सबकुछ बदल गया। बहुत से काम बड़ी तेज़ी से हुए। रमापति बाबू के जोर देने पर जाफर उसकी माँ और बहन उनके पिछवाडे के छोटे-से घर में रह रहे हैं। जाफर और

आंकडों का तमाशा

सवाल :- इस छोटे-से बतख में जो अंक हैं, उन्हें पहचानो।

जवाब :- एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, शून्य

- ए. अनितारानी, थाने

नीलिमा को स्कूल में भर्ती करवाया। अर्जुन के दिल में और घर में आनंद का समाबंध गया। फिर इसके बाद अर्जुन और जाफर की दोस्ती को कोई भी तोड़ नहीं सका।

मैत्री के बी
रुकावटे हैं
आभाव हैं

मृत्यु पर्वत

पूजा चौबे
विशाखपट्नम

अंजुल लुनिया
मुंबई.

बहुत पहले की बात है। जापान में एक कानून अमल में था। उस कानून के अनुसार सत्तर साल के वृद्धों को सुदूर पर्वत प्रांतों में छोड़कर आते थे। जिनकी आँखें ठीक तरह से दिखती नहीं थीं, जिन्हें साफ़ सुनायी नहीं पड़ता था, मानसिक रूप से जो बलहीन हो गये थे, जो कोई भी काम कर नहीं पाते थे, ऐसे बूढ़ों को वहाँ छोड़ दिया जाता था। क्योंकि समझा जाता था कि ये परिवार और समाज के लिए बोझ हैं। इसी उद्देश्य से यह कानून बना था और अमल में लाया जा रहा था।

उस जमाने में एक गाँव में इचिरो और चिरो नामक दो भाई अपनी माँ सुमी के साथ रहते थे। दिन भर दोनों भाई जब कड़ी मेहनत करके लौटते थे, तब उनकी माँ उनकी देखभाल करती थी और खाना खिलाती थी। पर जैसे-जैसे समय गुजरता गया, उन भाईयों के दिलों में दु:ख भरता गया। उनकी माँ की भी उम्र सत्तर साल की होने जा रही है। वह हर रोज़ खिड़की से उन पहाड़ों को देखते रहते थे, जो बरफ़ से ढके हुए थे। वे अक्सर महसूस करते थे, ऐसे कानून के कारण बूढ़ों के साथ बड़ा अन्याय हुआ। वयोवृद्ध अनुभवी होते हैं। उनका ज्ञान और विवेक आगामी पीढ़ियों के लिए उपयोगी होंगे। वे दोनों मानते थे कि इस सत्य को भुला दिया गया है और ऐसा ज्ञानशून्य और अंधा कानून बनाया गया है।

एक दिन शाम को माँ ने अपने दोनों बेटों को अपने पास बुलाया और कहा, ''बेटों, आज मैं सत्तर साल की हो गयी। कल ही मुझे ले जाकर पहाड़ी प्रांत में छोड़ आओ। शासन का उलंघन होना नहीं चाहिए।''

दोनों भाईयों के दिलों में बिषाद छा गया। वे ज़ोर-ज़ोर रोने लगे। फिर भी माँ ने उन्हें समझाया कि किसी भी हालत में शासन का उलंघन होना नहीं चाहिए। दूसरे दिन सबेरे ही वह निकलने तैयार हो गयी। तब तक वह रसोई बना चुकी थी। खा लेने के बाद तीनों मृत्यु पर्वत की ओर रवाना हुए

बहुत देर तक चलते-चलते वे पर्वत के पास पहुँचे। तीनों धीरे-धीरे पर्वत पर चढ़ने लगे। रास्ते के दोनों ओर के सूखी घास की नोकों को तोड़ती हुई माँ चलने लगी। वह तो लौटनेवाली नहीं हैं। वह चाहती थी कि लौटते समय घास की ये नोकें बेटों के लिए पहचान बनें। थोड़ी देर बाद तीनों पहाड़ के शिखर पर पहुँचे। माँ को वहाँ छोड़ते हुए दोनों को अत्यंत दु:ख हो रहा था। वे अपनी असहायता पर रो रहे थे। जब वे लौटकर जाने लगे, बारंबार मुड़कर अपनी माँ को देखते थे। मन ही मन ऐसे क्रूर कानून को धिक्कार रहे थे। पर वे कर भी क्या सकते थे? वे पर्वत से उतरते गये।

उतरते-उतरते शाम हो गयी। अंधेरा छाने लगा। बरफ़

भी गिर रही थी। तेज़ी से वे नीचे उतरने लगे। अकस्मात बड़े पैमाने पर बरफ़ की बारिश शुरू हो गयी। उन्हें मालूम नहीं हो पा रहा था कि किस तरफ़ जाएँ। वे फिर पर्वत पर चढ़कर माँ, माँ कहकर ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे। तब तक माँ की हालत बहुत बुरी हो चुकी थी। वह बरफ़ में बिल्कुल भीग गयी। वह अधमरी हो चुकी थी। इस दुस्थिति में भी उसने जब अपने बेटों की पुकार सुनी तो उसमें जान आ गयी। उन्होंने कहा कि घर लौटने का रास्ता उन्हें मालूम नहीं हो रहा है। वह उठी और पर्वत पर चढ़ते समय घास के झिरों को उसने जो तोड़ा उनको पहचानते हुए, बेटों के साथ नीचे उतरी। तीनों घर पहुँचे।

अब बेटों ने निश्चय किया कि माँ को पर्वत पर नहीं भेजेंगे। अपने घर के पिछवाड़े की छोटी-सी झोंपडी में उसे छिपा दिया। उन्होंने आवश्यक जागरूकताएँ बरतीं, जिससे कोई भी उसे देख न सके। तीनों आराम से समय गुजार रहे थे।

उस प्रांत के राजा के मन में अचानक एक विचित्र इच्छा जागी। राज्य के सभी पुरुषों को बुलाकर उनकी परीक्षा लेने का उसने निर्णय किया। उसने यह कहते हुए सबको सावधान किया कि उसका बताया काम जो ठीक तरह से नहीं करेंगे, उनपर जुर्माना लगाया जायेगा। पहली परीक्षा में राजा ने राख की रस्सी लाने का आदेश दिया।

ऐसी विचित्र परीक्षा पर सब चकित रह गये। इचिरो और चिरो ने अपनी माता को यह समाचार सुनाया। सब कुछ सुन लेने के बाद माँ सुमी ने कहा, "यह तो बड़ी ही आसान परीक्षा है। एक रस्सी लो और नमक से भरे पानी में खूब भिगोना। बाद इसे एक धातु की थाली में रखना। फिर उसमें आग लगाना। वह जलकर राख हो जायेगी। उसमें जो नमक है, वह रस्सी के आकार में उसे जमकर पकड़े रखेगा।"

दोनों भाईयों के अलावा इस परीक्षा में कोई भी जीत नहीं सका। "अब दूसरी परीक्षा। एक शंख चाहिए, जो सन् के धागे से गुंथा हुआ हो।" राजा ने आज्ञा दी।

सुमी ने इसके लिए भी एक उपाय बताया। उसने कहा, "पहले एक चींटा को पकड़ो। उसकी पीठ में एक पत्ते धागे के सिरे को बांधो। फिर उसे शंख के ऊपरी भाग में जो छेद है, उसके द्वारा अंदर भेजो। इसके बाद शंख के निचले भाग में जो छेद है, उसके पास चावल के दाने

रखो। चावल के दानों से आकर्षित होकर चींटा शंख में प्रवेश करेगा और बाहर आयेगा। उसके साथ-साथ बंधा हुआ धागा भी बाहर आयेगा।"

भाईयों के लाये गये सनके धागे से गुंथे शंख को देखकर राजा खुश हुआ। "एक ऐसा डमरू चाहिए, जिसे पीटे बिना ही ध्वनि निकले" राजा ने आज्ञा दी। दोनों भाइयों ने माँ से यह बात बतायी। तब माँ ने कहा, "दोनों ओर खुली हुई एक सुराही लो। उसके दोनों ओर ध्वनि पैदा करनेवाला जंतु का चमडा कसकर चिपका दो। चिपकाने के पहले मधुमक्खी को उसमें डाल दो। फिर तुम डमरू ले जाकर राजा को देना। जब वे उसे अपने हाथ में लेने उठायेंगे तब उसके हिलने-डुलने के कारण अंदर की मक्खियाँ बाहर आने की कोशिश करेंगी। वे चमडे से टकरा जायेंगी। पीटे बिना ही तब डमरू से ध्वनि निकलने लगेगी।"

भाईयों ने ऐसा ही किया। तीनों परीक्षाओं में बिजेता भाईयों की राजा ने तारीफ़ की। तब भाईयों ने राजा से कहा, "प्रभु, प्रशंसा या पुरस्कार हमें नहीं चाहिए। हमारे पिछवाड़े में जो हमारी माँ छिपी हुई है, उन्हें इसका श्रेय मिलना चाहिए", कहते हुए उन्होंने असली रहस्य बता दिया। फिर दोनों ने कहा, "हमारी माँ सत्तर साल की है। फिर भी हमने उन्हें मृत्यु पर्वत पर नहीं पहुँचाया। प्रभु हमें क्षमा करें।"

"हमें वृद्धों का आदर करना चाहिए। उनके अनुभव ज्ञान का उपयोग हमें सही पद्धति में करना चाहिए। इतने लंबे अर्से से चले आते हुए कानून को इसी क्षण रद्द कर रहा हूँ। तुम अपनी माँ को ले आना" राजा ने कहा।

बाद में राजा ने सुमी को अपना सलाहकार बनाया और सत्कार किया।

वृद्धों का हम आदर करें। बड़ के अनुभव ज्ञान का गौरव करें।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

शेक्सपियर के बाद क्या हम (*'बिवेर द आॅइड्स आॅफ मार्च '* - जुलियस सीसर) कह सकते हैं कि नवम्बर के आईडस को याद रखो? भारत में १४ नवम्बर बाल दिवस के रूप के मनाया जाता है। इस पूरे महीने में बच्चे किसी न किसी तरह अपनी कला को प्रदर्शित करते है। भारतीय पुराण बच्चों की कहानियों से भरा पड़ा है। जिन्हें हम अक्सर याद किया करते है। क्या तुम नीचे दी गई घटनाओं के आधार पर बच्चों को पहचान सकते हो?

१. एक राजकुमार ने अपने पिता के जंगल जाने पर पूर्ण रूप से ३६,००० वर्षों तक राज्य किया। उसके बाद वह एक लोक में चले गए और कहा जाता है कि वे अभी भी जीवित है। वह राजकुमार कौन थे और उनके पिता कौन थे?

२. एक ऋषि जिन्होंने पुत्र प्राप्ति की कामना से तपस्या की तो भगवान ने उनसे पूछा-''क्या तुम्हें मंद बुद्धि वाला बहुत बर्षों तक जीवित रहनेवाला पुत्र चाहिए अथवा ज्ञानी पुत्र, जो अल्पायु होगा?'' ऋषि ने दूसरे पुत्र की कामना व्यक्त की। उस बचे का नाम बताओ जो ऋषि के यहाँ जन्मा। ऋषि का नाम क्या था ?

३. एक असुर राजा को पता चला कि उसका पुत्र उसकी आज्ञा का पालन नहीं करता और भगवान की पूजा करता है। इसलिए उसने अपने पुत्र को जान से मरवा देने के कई प्रयत्न किए, परन्तु सभी नाकाम रहे। क्योंकि वह बालक जिस भगवान की पूजा करता था, वे हमेशा उसकी रक्षा करते रहे। उस अद्भुत बालक का नाम क्या था और उसके रक्षक भगवान कौन थे?

४. वह सात वर्ष का बालक था। उसके पिता एक यज्ञ करवा रहे थे, जिसके बीच में वे साधु-संतों को गायें भी दान कर रहे थे। बचे ने देखा कि गायें बूढ़ी और शक्तिहीन हो चुकी हैं। ''मुझे आप किसे दे रहे हैं?'' उसने अपने पिता से पूछा, जिसने उत्तर दिया : ''मृत्यु के देवता को।'' यम उस लड़के के समक्ष प्रत्यक्ष हुए और उसे अमरत्व का रहस्य बताया। वह लड़का कौन था? उसके पिता का नाम क्या था?

५. कुछ राजकुमार शिकार खेलने गए थे। उनका कुत्ता जंगल में एक आदिवासी लड़के को देखकर उस पर भौंकने लगा। उस लड़के ने कुत्ते को चुप करने के लिए उसके मुँह को बाणों से भर दिया। सारे राजकुमार चकित रह गए। जब उन्होंने यह पूछा कि वह कौन है तो लड़के ने राजकुमारों के गुरु का नाम बताकर इन्हीं को अपना गुरु बताया। वह लड़का कौन था? वे राजकुमार कौन थे?

६. एक राजा को तब बड़ा ही आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने देखा कि एक छोटा सा बचा, शेर के बचे का दाँत गिनने का प्रयास कर रहा है। वे तब और चकित हुए जब उन्हें यह पता चला कि बचा उन्हीं का पुत्र है। वह लडका कौन था? वह राजा कौन था?

(उत्तर अगले महीने)

अक्टूबर की प्रश्नोत्तरी का उत्तर भी दिसम्बर माह में दिया जाएगा।

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झांकियाँ युग-युग में सत्य के लिए इसकी गैरवममी खोज

२२. आस्तिक - नास्तिक
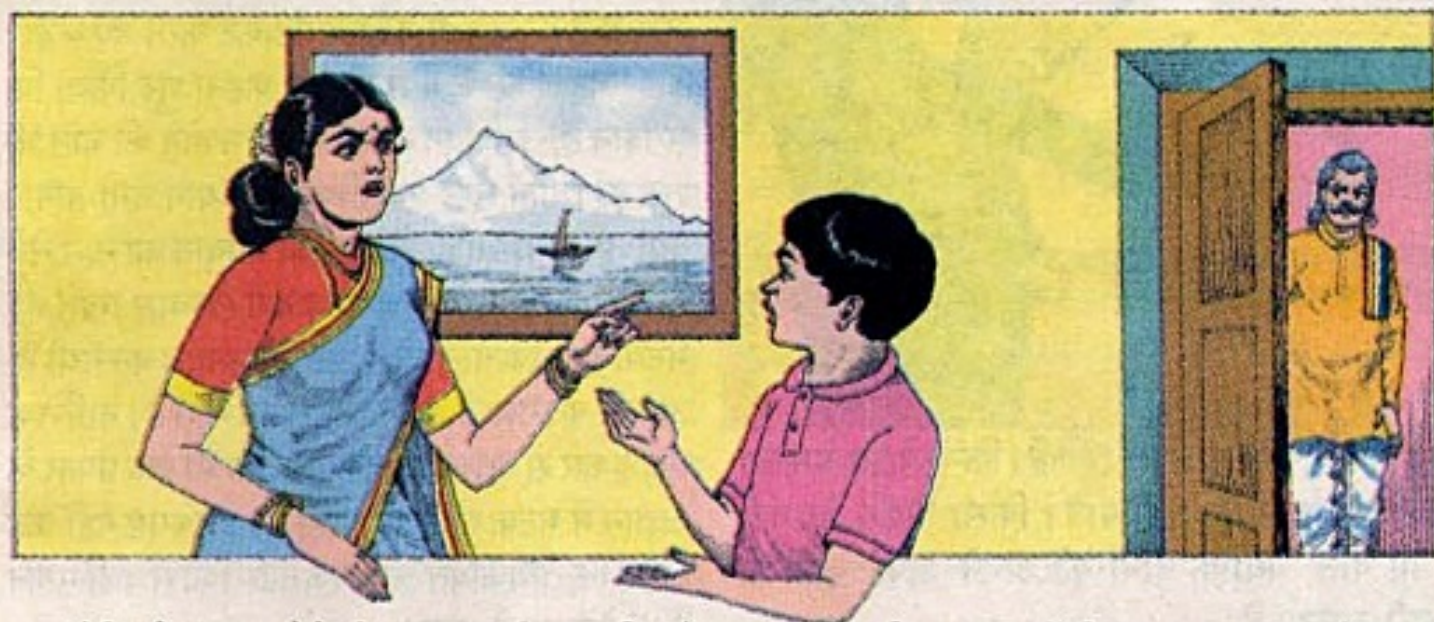
संदीप ने आकर जैसे ही बात बतायी, उसकी माँ जयश्री नाराज़ हो उठी और बोली "तुम उस सभा में गये ही क्यों? उनमें से कुछ लोगों को मैं जानती हूँ। वे कुछ भी नहीं जानते पर सब कुछ जानने का झूठा दावा करते हैं।"

"माँ, मैं वहाँ गया अवश्य, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं उनके विचारों से सहमत हूँ। मैंने तो उनका विरोध भी किया। दीवार पर लटके चित्र को दिखाया और उनसे कहा कि यहाँ चित्र है तो अवश्य ही इसका चित्रकार भी होगा। उसी प्रकार इस सृष्टि का सृष्टिकर्ता भी अवश्य होगा। इस विषय को लेकर मैंने उनसे वाद-विवाद भी किया" संदीप ने कहा।

देवनाथ ने उसी वक़्त कमरे में प्रवेश किया। उन्होंने पूछा कि माँ और बेटे के बीच में हो रही यह दिलचस्प चर्चा कैसे शुरु हुई। संदीप ने इस चर्चा का कारण बताया।

संदीप जिस स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहा है, उस स्कूल में एक हेतुवादी और नास्तिक अध्यापक हैं। हर इतवार के दिन वह अपने दोस्तों एवं विद्यार्थियों को अपने घर बुलाता है और हेतुवाद को लेकर अपने विचार प्रकट करता है, उनपर विशद रूप से प्रकाश डालता है। नास्तिकता के ठोस गुणों को लेकर वह भाषण देता है। ऐसी ही सभा में गया था संदीप। इसी कारण उसकी माँ जयश्री ने उसे डाँटा।

"संदीप, तुम कह रहे थे कि हर चित्र के पीछे एक चित्रकार होता है। तुम्हारी इस दलील को सुनते हुए एक शास्त्रवेत्ता और उनके एक मित्र के बीच हुई चर्चा मुझे याद आयी। शास्त्रवेत्ता एक आस्तिक हैं यानी विशवास है कि भगवान है। पर उनके मित्र भगवान के आस्तिक में उनका विश्वास नहीं रखते। वे कट्टर नास्तिक हैं। इस विषय को लेकर अक़सर उन दोनों के

बीच वाद-विवाद चलते रहते हैं। किन्तु वे इस समस्या का समाधान ढूँढ नहीं पाते। किसी निर्णय पर नहीं आ पाते, क्योंकि दोनों को अपने-अपने वाद की पूरी आस्था है।

एक दिन शास्त्रवेत्ता के कमरे में उनके मित्र आये। उन्होंने देखा कि शास्त्रवेत्ता की मेज़ पर चमकते हुए लौहे से बनाया गया सौर मंडल का एक नमूना रखा हुआ है। उसे देखते ही उनके दोस्त ने कहा, "बहुत सुंदर है। इसे किसने बनाया?" शास्त्रवेत्ता ने दोस्त ने पूछा।

"किसी ने भी इसे नहीं बनाया। यह आप ही आप बन गया।" शास्त्रवेत्ता ने कहा।

"हंसी-मज़ाक की बात छोड़ो। पहले बताओ, इसे किसने बनाया? बहुत सुंदर है। मैं भी एक ऐसा खरीदूँगा।" दोस्त ने कहा।

"मित्र, तुम तो हमेशा बताते रहते हो कि सूर्य, चंद्र, ग्रह व असंख्य नक्षत्रों के साथ महाअद्भुत दिखायी देनेवाला सौरमंडल अपने आप ही बना है, इसे किसी ने नहीं बनाया। जब मैं बता रहा हूँ कि यह नमूना भी आप ही आप बना है तो मेरी बात का विश्वास क्यों नहीं करते?" शास्त्रवेत्ता ने पूछा।

मित्र सही जवाब नहीं दे पाये। वेद सोच में पड़ गये। शास्त्रवेत्ता की कहीं इस बात ने लंबे अर्से से उनके बीच चली आ रहीं चर्चा व वाद-विवाद को समाप्त कर दिया। देवनाथ ने यह घटना सुनायी।

"मुझे इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि ऐसे भी मानव हैं, जो भगवान में विश्वास नहीं रखते। बुद्धिमान मानव भला भगवान के अस्तित्व को कैसे इनकार कर सकता है?" जयश्री ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

"बहू, जिस दिन से लोगों ने कहना शुरु किया कि भगवान है, उसी दिन से भगवान के न होने की बात भी शुरु हुई। यहाँ तुम्हें एक विषय पर ध्यान देना होगा। क्या तुम समझती हो कि जो-जो भगवान का नाम लेते हैं, वे सबके सब सचमुच भगवान में विश्वास रखते हैं? भगवान पर विश्वास जो है, वह एक आदत बन गयी है, आचार बन गया है, मूढ़ विश्वास बन गया है। नास्तिक एक प्रकार से अज्ञानी हैं तो आस्तिक भी एक प्रकार के अज्ञान में भटक रहे हैं। इसलिए यह हम स्पष्ट नहीं कह सकते कि तथाकथित आस्तिक नास्तिकों से कहीं महान हैं।" देवनाथ ने कहा।

"पर हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति दैवविश्वास का युगों-युगों से प्रबोधन कर रही है। तो क्या वह सत्य नहीं है?" जयश्री ने कुतूहल-भरे स्वर में पूछा।

"वह सत्य ही है बहू! युगों से सत्य का अन्वेषण करते हुए जीवन के अर्थ को ढूँढते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं। यह हमारे संप्रदाय की विशेषता है। कितने ही उदात्त भावों से भरे लोग हैं हम। हमारे अपने सिद्धांत भी हैं। किंतु किसी एक ने भी दूसरे का नाश का काम नहीं किया। सच कहा जाए तो नास्तिकता का प्रारंभ भारत में ही हुआ और यह फैली भी कुछ हद तक। चार्वाक नामक एक तत्ववेत्ता ने इसका प्रचार किया। उन्होंने लोकामतवाद के नाम से एक विचार-पद्धति को एक सिद्धांत का रूप दिया। बृहस्पति जैसे नास्तिक तत्ववेत्ता भी हैं, जिन्होंने विश्व को सर्वस्व माना।

"बृहस्पति देवताओं के गुरु थे न दादाजी?"

संदीप ने पूछा। "वे बृहस्पति अलग हैं। ये महान पंडित, बुद्धि संपन्न, लोकायत सिद्धांत के प्रचारक हैं। इन प्रचारकों में से अजित व संजय भी दिग्गज हैं। परंतु कहा जाता है कि चार्वाक के बाद प्राचीन "अजीविका" का पुनः प्रचार करनेवाले व्यक्ति विशेष हैं, गोशाल नामक नास्तिक। इनके जीवन का अंत विषादमय है" देवनाथ ने कहा।

"क्यों ऐसा हुआ दादाजी?" संदीप ने पूछा।

"वह बड़ी ही दिलचस्प घटना है" देवनाथ फिर गोशाल की कहानी यों सुनाने लगे।

जैन धर्म अहिंसा को परम धर्म मानता है। इस धर्म के संस्थापक हैं वर्धमान महावीर। गोशाल इन्हीं के समकालिक हैं। पहले वे दोनों गाढ़े दोस्त भी थे। परंतु शनैः शनैः गोशाल, महावीर से ईर्ष्या करने लगा।

एक दिन दोनों मित्र जंगल से गुज़र रहे थे। महावीर ने पेड़ के चारों ओर लिपटी एक हरी लता देखी। बहुत ही खुश होते हुए उसे गोशाल को दिखाते हुए उन्होंने कहा, "मित्र, इस लता को देखो। आज इस लता में जो कलियाँ हैं, एक-दो दिनों में विकसित होंगीं और सुंदर फूल निकल आयेंगे। देखा, प्रकृति कितनी आकर्षणीय और अद्भुत है?"

"क्या तुम दावे के साथ कह सकते हो कि वे अवश्य खिलेंगीं?" गोशाल ने ज़ोर देकर पूछा।

मित्र के कंठ स्वर की गंभीरता पर महावीर को आश्चर्य हुआ। क्योंकि उन्होंने केवल वास्तविकता पर उसका ध्यान आकृष्ट किया था। पर उसके इस प्रश्न ने उन्हें गंभीर बना दिया और वे सोच में पड़ गये। क्षण भर के लिए उन्होंने आँखें बंदकर लीं और फिर आँखें खोलते हुए उन्होंने कहा, "हाँ, ये कलियाँ अवश्य ही फूल बनकर विकसित होंगीं।" उनकी बातों में विश्वास भरा हुआ था।

गोशाल ने व्यंग्य भरी दृष्टि से उन्हें देखा और मर्मभरी हंसी हंस दी। वे कुछ नहीं बोले। दोनों आगे बढ़ते गये। थोड़ी देर बाद वे एक मुनि के आश्रम में पहुँचे और रात को वहीं विश्राम लिया।

आधी रात हो गयी। गोशाल ने देखा कि महावीर मस्त सो रहे हैं तो वे चुपचाप वहाँ से खिसक गये और आश्रम के बाहर आये। वे उस पेड़ के पास पहुँचे, जिससे लता लिपटी हुई थी। अपना पूरा बल लगाकर उन्होंने लता को खींचा और पास ही के एक गड्ढे में फेंक दी। फिर आश्रम लौटकर वे सो गये।

दो दिनों के बाद दोनों मित्र जंगल के उसी मार्ग से

गुज़र रहे थे। महावीर तो उस लता की बात भूल ही गये, जिसे लेकर दोनों में चर्चा हुई थी। उस स्थल के पास आते हुए गोशाल ने कहा, "तुमने जिन कलियों का ज़िक्र किया, वे आम फूल बनकर खिले नहीं होंगे" उनकी बातों में व्यंग्य भरा हुआ था।

"क्या तुम ऐसा समझते हो?" महावीर ने पूछा।

"मैं ऐसा समझता मात्र नहीं हूँ। मुझे निश्चित रूप से मालूम है। फूल विकसित नहीं हुए" गोशाल ने कहा।

बातें करते हुए वे उस जगह पर पहुँचे। गोशाल ने जो लता गड्ढे में फेंकी थी, वहीं है। कल रात को जो वर्षा हुई थी, उसके कारण सभी कलियाँ रंग-बिरंगे फूलों के रूप में विकसित हुई और देखने में बड़ी ही सुंदर लग रही थीं।

महावीर ने मंदहास करते हुए उन्हें केवल दिखाया, पर वे कुछ नहीं बोले। किन्तु गोशाल का चेहरा फीका पड़ गया। वे अपने आपको काबू में नहीं रख सके और जो मुँह में आया, बकते रहे, महावीर को गालियाँ देते रहे।

"पहले से ही जब सब कुछ निर्णीत है, तब हमें क्यों काम करना चाहिए? हमारे कामों का मतलब ही क्या है? मानव जीवन का क्या अर्थ रह जाता है?" क्रोध-भरे स्वर में यों कहते हुए वहाँ से चले गये।

क्रमशः गोशाल के मन में महावीर के प्रति ईर्ष्या, द्वेष, प्रतीकार की भावना ज़ोर पकड़ती गयी। महावीर जिस किसी भी सिद्धांत का प्रचार करते थे, वे उसका डटकर विरोध करने लगे। इतना ही नहीं, मंत्र-तंत्रों की सहायता से उनका अंत कर देने पर तुल गये। किन्तु महावीर के सद्गुण तथा उनके आध्यात्मिक बल ने कवच बनकर उनकी रक्षा की। गोशाल ने जितनी भी दुष्ट शक्तियों का प्रयोग उनपर किया, वे सबके सब व्यर्थ साबित हुई। उल्टे वे दुष्ट शक्तियाँ गोशाल पर ही अपना प्रभाव दिखाने लगीं। गोशाल रोग-ग्रस्त हो गये। कुछ दिनों के बाद मति-भ्रष्ट होकर मर गये।

"देख लिया न, चिंगारी की तरह शुरु होकर ईर्ष्या क्रमशः दावानल की तरह फैलकर किस प्रकार मानव-जीवन का नाश कर देती है" कहानी का संदेश बताते हुए देवनाथ ने समाप्त किया। *(सशेष)*

देवी भागवत

रंभ व करंभ दनव के बेटे थे। उनकी कोई संतान नहीं हुई, इसलिए वे दीर्घ काल तक तपस्या करते रहे। करंभ ने पंच नदी तीर्थ में डूबकर तपस्या की। रंभ ने एक पेड़ पर चढ़कर बैठे-बैठे तपस्या की।

इंद्र ने मगर बनकर पंच नदी में प्रवेश किया और करंभ को मार डाला। अपने भाई की मौत पर रंभ आवेश में आ गया और अग्निहोत्री को अपना सिर काटकर देने के लिए सन्नद्ध हुआ।

जब अपना सिर काटने के लिए रंभ ने तलवार उठा ली तब अग्नि देव प्रत्यक्ष हुए और पूछा "क्यों आत्महत्या करने पर तुल गये? इससे भला क्या लाभ होगा? तुम्हारी तपस्या से मैं प्रसन्न हूँ। पूछो, क्या वर चाहिये तुम्हें?"

"देव, आपको सचमुच मुझपर दया हो तो एक अजेय पुत्र दीजिये। देवता व दानव भी उसे जीत न सकें।" रंभ ने कहा।

"तुम्हारी मनोच्छा पूर्ण हो" कहकर अग्निहोत्री अदृश्य हो गये।

रंभ जब लौटकर आ रहा था तब उसने एक सुंदर प्रदेश में एक भैंस देखा। यह प्रदेश यक्षों के अधीन था। वह महिषि उसके साथ-साथ पाताल आयी।

वहाँ इस भैंस का पीछा एक और भैंस ने किया। दूसरे भैंसे की इस करतूत से रंभ नाराज़ हो उठा और उसे खूब पीटा। उस भैंस ने रंभ को ऊपर उठाया और अपनी सींगों से उसे मार डाला। रंभ की इस हालत को देखकर महिषि भी उसके साथ-साथ आग में जल गयी। उन लपटों से दो राक्षस प्रकट हुए। एक है महिषि और दूसरा रक्तबीज।

राक्षसों ने महिषासुर को अपना राजा चुना। महिषि ने कांचन पर्वत पर घोर तपस्या की। फलस्वरूप ब्रह्मदेव प्रत्यक्ष हुए। उसने ब्रह्मा से वर

मांगा ''महात्मा, मेरी मौत ही न हो''।

इसपर ब्रह्मा ने कहा ''जन्म जितना निश्चित है, मृत्यु भी उतनी ही निश्चित है। इससे कोई बच नहीं सकता। जन्म और मृत्यु जब निश्चित हों, अटल हों तो तुम्हें अमरता का वर कैसे दे सकता हूँ। भूमि, समुद्र, पर्वत का भी नाश होता है। कोई भी इससे बच नहीं सकता। अमरता के अलावा कोई दूसरा वर मांगो। अवश्य तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।''

तब महिषि ने कहा ''मुझे कोई भी स्त्री मार नहीं सकती इसलिए मुझे ऐसा वर दिजिये, जिससे किसी भी मानव, दानव व देवता के हाथों मैं न मरूँ।''

''ठीक है, ऐसा ही होगा। किन्तु याद रखो, तुम एक स्त्री के हाथों ही मरोगे'' कहकर ब्रह्मा चले गये।

इस वरदान को पाकर वह मदोन्मत्त हुआ। उसे विश्वास हो गया कि कोई भी पुरुष मुझे मार नहीं सकेगा। वर के बल पर स्वर्ग पर आक्रमण करने के लिए वह सन्नद्ध हो गया। एक सेवक को बुलाकर आज्ञा दी कि वह स्वर्ग जाए और इंद्र को युद्ध की सूचना दे। उसने जाकर इंद्र को यह बात बतायी।

इंद्र ने आवेश में आकर अपने दिक्पालकों को बुलाया और उनसे कहा ''रंभ के बेटे महिष को ब्रह्मा ने वर दिये। इस मस्ती में आकर युद्ध के लिए वह सैनिकों को सन्नद्ध कर रहा है। बडी-बड़ी बातें कर रहा है। कहता है, मैं स्वर्ग को जीत जाऊँगा। उसके दूत ने आकर उसका संदेश दिया।

संदेश के द्वारा उसने कहा महिषि का सेवक बनकर रहना तुम्हें पसंद है या युद्ध करना। इस स्थिति में क्या करना है, आप ही लोग निर्णय कीजिये। शत्रु चाहे कितना भी बलवान क्यों न हो, उसे माफ़ नहीं करना चाहिये। जीतना या हारना भगवान के हाथों में है। फिर भी हमें हाथ पर हाथ धरे बैठना नहीं चाहिये। हमें अपनी तरफ़ से जो भी प्रयत्न करने हैं, करेंगे। सुलह करना अच्छी बात है। परंतु ऐसे दुष्टों से सुलह करने से बात और बिगड़ जायेगी। युद्ध करना भी हो तो पहले हमे अपने व शत्रुओं के बल का अंदाजा लगाना होगा। इसके लिए यहाँ से एक आदमी को भेंजेंगे।''

इंद्र का भेजा दूत लौट आया और महिषि के बलों के बारे में पूरी जानकारी दी। यह सुनकर इंद्र चकित रह गया। उसने अपने पुरोहित को बुलाया और कहा ''महिषि अपार सेनाओं को लेकर हमपर युद्ध करने निकल रहा है। इस आक्रमण को रोकने का क्या कोई उपाय है?''

इंद्र की घबराहट को देखकर बृहस्पति ने कहा

''कोई खतरा सामने आ जाए तो साहस खोना नहीं चाहिये। धीरज धरो। जो होना है, होकर रहेगा। फिर भी यथासम्भव प्रयत्न करते रहो। इसीलिए तो महिषि मोक्ष के लिए तपस्या करते हैं। केवल भगवान पर ही भरोसा रखोगे तो काम नहीं होगा। हमारे प्रयत्नों के बाद भी अगर कोई फल नहीं निकला तो फिर भगवान पर छोड़ दो।''

इंद्र ने कहा ''देव, मानता हूँ कि बिना प्रयत्न के कोई काम नहीं होता। जिस प्रकार यतियों के लिए विज्ञान आवश्यक है, ब्राह्मणों को तृप्ति आवश्यक है, उसी तरह राजाओं को शत्रु संहार आवश्यक है। आप सानुकूल सलाह देंगे तो मैं युद्ध की तैयारी करूँगा। आप, बज्रायुद्ध व हरिहर मेरे सहायक हैं।''

तब बृहस्पति ने इंद्र से कहा ''युद्ध करना और न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है। मैं युद्ध करने या न करने की सलाह नहीं देता। जो उपाय तुम्हें सही लगे, उनपर सोचो-विचारो।''

तब इंद्र ब्रह्मा की शरण में गया और कहने लगा ''महिषि नामक राक्षस मदोन्मत्त होकर स्वर्ग पर आक्रमण करने जा रहा है। उसके साथ भारी सेना भी आनेवाली है। मुझे डर लगने लगा है। मुझे इस दुर्स्थिति से उबारिये।''

ब्रह्मा ने कहा ''अच्छा यही होगा कि शिव एवं विष्णु को भी साथ लेकर जाएँ और शत्रुओं से युद्ध करें। चलिये, पहले कैलाश चलते हैं।''

दोनों मिलकर शिव के पास गये और पूरा वृत्तांत सुनाया। बाद में तीनों मिलकर विष्णु के पास गये। अच्छी तरह से सोच-विचार के बाद निर्णय हुआ कि राक्षस महिषि से युद्ध किया जाए। हंस पर

ब्रह्मा, बैल पर शिव, गरूड़ पर विष्णु आसीन होकर निकले। उनके साथ-साथ मोर पर कुमारस्वामी, हाथी पर इंद्र विराजमान होकर चले। देवताओं की सेनाएँ और राक्षसों की सेनाएँ टकराने के लिए तैयार खड़ी थीं।

बड़ा भयानक युद्ध हुआ। दिक्पालकों, इंद्र व त्रिमूर्तियों ने अपना शौर्य-पराक्रम प्रदर्शित किया, किन्तु वे महिषि के सामने टिक न सके। आखिर उन्हें दुम दबाकर युद्ध क्षेत्र से भागना पड़ा। अब स्वर्ग महिषि के वश हो गया। महिषि इंद्र के आसन पर बैठ गया और समस्त अपने राक्षसों को दे दिया। देवताओं के खज़ाने को अपने अधीन कर लिया और स्वार्गिक सुख का अनुभव करते हुए अपना शासन निधड़क चलाने लगा।

यों कष्ट सहते जाना देवताओं के लिए असंभव हो गया। उनसे यह अपमान सहा नहीं जा रहा
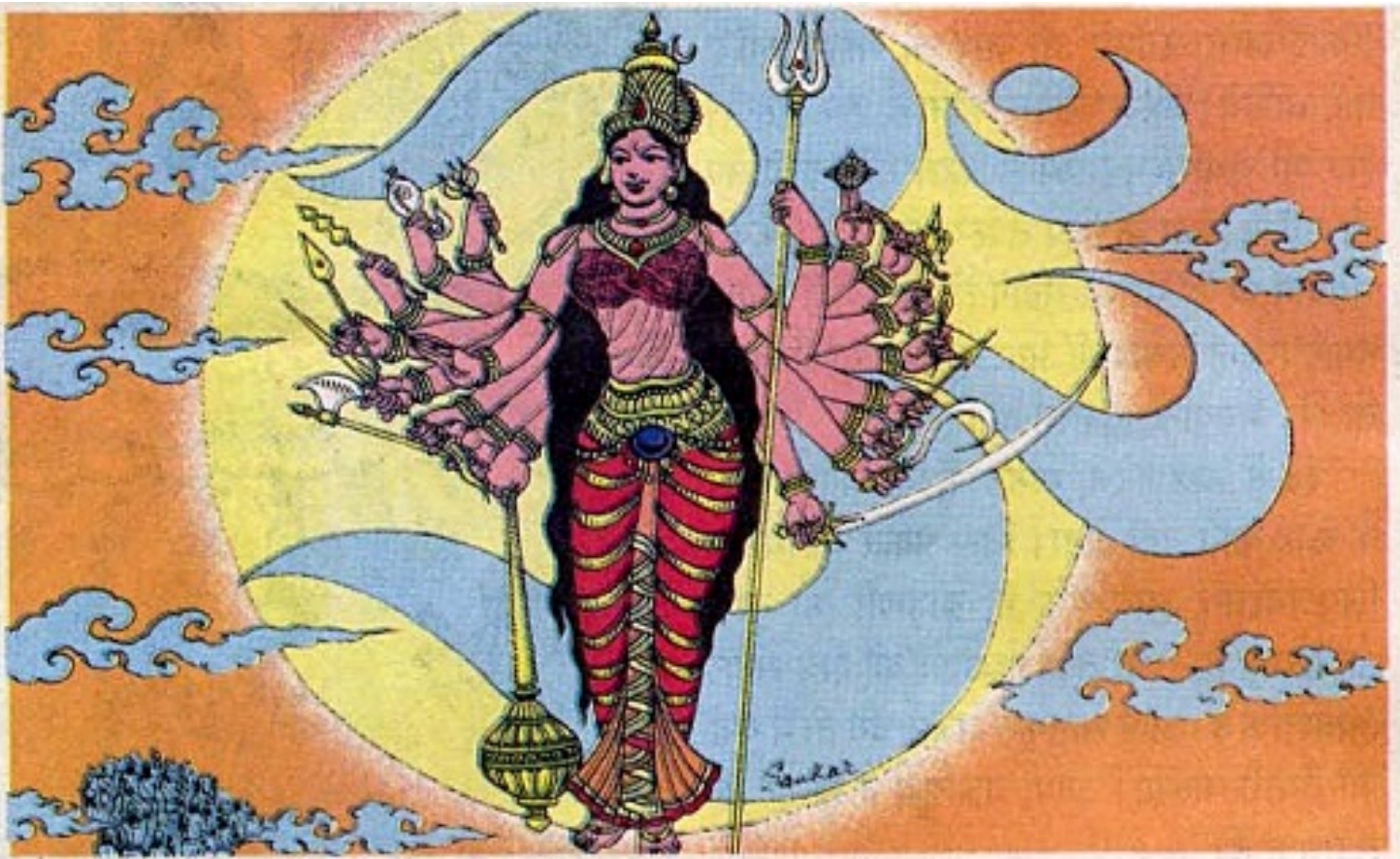
था। एक बार ब्रह्मा के दरबार में सभी गये और कहने लगे, ''अकेले महिषासुर ने हमपर जीत पा ली और हमें ऐसी दुर्भर स्थिति में डाल दिया। आप हमारे पिता समान हैं। हमारी दुर्स्थिति पर आप क्यों ध्यान नहीं देते। आप सर्वज्ञ हैं, कहिये, हमारा क्या होगा?''

''मैं करूँ भी क्या? किसी भी पुरूष के हाथों न मारे जाने का वर उसने पाया। उसे एक स्त्री ही मार सकती है। पहले हम शिव से, फिर बाद विष्णु से इस विषय की गंभीरता पर चर्चा करेंगे। चलिये!'' ब्रह्मा ने कहा।

सब देवता ब्रह्मा के साथ शिव के पास आये।

''किस काम पर आना हुआ?'' शिव ने पूछा।

''आपसे क्या छिपा है? महिषासुर ने स्वर्ग को अपने अधीन कर लिया और इंद्र तथा अन्य देवी-देवताओं को सता रहा है। वे आपकी सहायता चाहते हैं'' ब्रह्मा ने कहा।

शिव ने मुस्कुराकर कहा, ''आप ही ने तो देवताओं को इस दुर्स्थिति पर ला खड़ा कर दिया। आपके बरदान के कारण कोई भी पुरूष उसका बध नहीं कर सकता। अब आप ही सुझाइये कि उसे मार डालने के लिए किस स्त्री को भेजें? क्या आप अपनी धर्मपत्नी को भेजेंगे? या मैं अपनी धर्मपत्नी को भेजूँ? नहीं तो इंद्र की पत्नी यह काम करेगी? पर हमारी पत्नियों में से एक भी युद्ध-विद्या से परिचित नहीं हैं। उन्हें भेजें भी, तो कोई लाभ नहीं होगा। अत: विष्णु से मिलकर उनसे पूछेंगे कि क्या किया जाए। वे अवश्य कोई न कोई रास्ता ढूंढ निकालेंगे।''

सब मिलकर विष्णु के पास गये। उनके आने का कारण जानकर विष्णु ने कहा ''हम सबके सब राक्षस महिषि के हाथों हार चुके हैं। उसका संहार

केवल स्त्री ही कर सकती है तो हम अपने तेजस्वी दृष्टि से एक स्त्री की सृष्टि करें। उसे हम अपने हथियार देंगे और फिर उस स्त्री व महिषि के बीच लड़ाई होगी।''

विष्णु ये बातें उनसे बता ही रहे थे कि इतने में सभी देवताओं से तेजस्व प्रकट हुआ। वह क्रमश: एकत्रित हुआ और अंतत: अठारह हाथों की एक स्त्री के रूप में सबके सम्मुख प्रकट हुई। देवताओं ने अपने-अपने हथियार उसके हाथों में रखे। तब उस स्त्री ने देवताओं को संबोधित करते हुए कहा ''भयभीत न होना। वह राक्षस मेरे हाथों मारा जायेगा'' कहती हुई उसने सिंहनाद किया।

महिषासुर ने यह नाद सुन लिया तो कहने लगा ''वह कौन है, जो सिंह की तरह गरज रहा है। उसे पकड़कर तुरंत मेरे सामने ले आओ। मेरे हाथों से पराजित देवता इतना साहस नहीं कर सकते''।

महिषि की आज्ञा के अनुसार कुछ सैनिक आये। महादेवी का अवतार देखकर वे थर-थर कांपने लगे। वे भागे-भागे गए और महिषि से कहने लगे ''कोई सिंह पर आरूढ़ होकर आयी है। शरीर भर आभूषण हैं। उसके अठारह हाथों में हथियार हैं।

उसने अपने मंत्री से कहा ''कैसे भी हो, उस स्त्री को यहाँ ले आना। उसे अपनी राजमहिषी बनाऊँगा।''

मंत्री आया और दूर खड़े होकर उस स्त्री से कहा ''माते, आप कौन हैं? आप यहाँ क्यों आयीं? समस्त लोकों का शासक महिषासुर आपसे विवाह रचाना चाहता है।''

देवी ने मुस्कुराते हुए कहा ''उसका वध करने आयी हूँ। तुम अच्छे लगते हो। तुम्हारा संहार नहीं करूँगी। अपने शासक से जाकर कहो कि मैं किस काम पर आयी।''

महिषि को अपने मंत्री की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। समझौता करने उसने अपने सेनापति ताम्र को भेजा। देवी ने उसे मार डाला। महिषि ने अपने सेनापतियों को भेजा। वे भी देवी के हाथों मारे गये। महिषासुर स्वंय आया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। चूँकि महिषि वामरूपी था, इसलिए उसने अनेकों वेष धारण करते हुए युद्ध किया। अंत में देवी ने चक्रायुद्ध से उसका सिर काट डाला।

देवता फूले न समाये। सबने देवी का स्तोत्र किया।

नित्य संतोषी

भीम और राम अग़ल-बग़ल में रहते थे। राम सदा खुश रहता था। परंतु भीम हमेशा दुःखी और परेशान रहता था।

राम की चार एकड़ की उपजाऊ ज़मीन थी। भीम को लगा कि उसकी खुशी की वजह यही है। इसलिए दिन-रात उसने कड़ी मेहनत की, पैसे इकट्ठे किये और रेगिस्तान में पाँच एकड़ खरीदे। फिर भी राम उससे अधिक संतुष्ट था। भीम ज़्यादातर इसी सोच में पड़ा रहता था कि राम की खुशी का कारण क्या हो सकता है और वह मुझसे ज़्यादा खुश क्यों है ?

राम की शादी हो गयी। उसकी पत्नी बड़ी सुंदर थी। जैसे चांद का टुकड़ा हो। भीम को लगा कि उसकी खुशी का कारण यह भी हो सकता है तो उसने भी शादी करने की ठानी। भीम ने बड़ी ही खोज के बाद राम की पत्नी से भी अधिक सुंदरी को चुना और उससे शादी की। फिर भी भीम की खुशी राम की खुशी के सामने नहीं के बराबर थी। पर भीम इससे निराश नहीं हुआ। उसने अपने प्रयत्न चालू रखे।

राम ने दो मंजिलोंवाला भवन बनवाया तो भीम ने तीन मंजिलोंवाले भवन का निर्माण किया। राम हर रोज़ दस लोगों को भोजन खिलाता तो भीम बीस लोगों को अन्नदान करता था। हर क्षण वह उससे होड़ लगाता रहा पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। जहाँ तक खुशी की बात है, राम का पलड़ा ही भारी होता था।

भीम हमेशा राम के क्रियाकलापों पर नज़र रखने लगा। देखने लगा कि वह किस पल क्या करता है। वह जो भी काम करता था, उसका दुगुना भीम करने लगा। फिर भी संतोष में वह उसकी बराबरी नहीं कर पाया, यही उसकी चिंता का प्रधान कारण बन गया।

ऐसी स्थिति में एक साधु का उस गाँव में आगमन हुआ। राम उसे सादर अपने घर ले गया

श्रीराम कमल

और भक्ति-श्रद्धा सहित उसका आदर-सत्कार किया।

उसके आदर-सत्कार एवं भक्ति-श्रद्धा से बहुत ही प्रभावित होकर साधु ने कहा, ''पुत्र, तुम्हें जो भी चाहिए, माँगो!''

राम ने विनयपूर्वक कहा, ''मेरी पत्नी सदगुणी है, मेरी संतान अच्छे स्वभाव की हैं। जो है, उसी से संतुष्ट हूँ। स्वयं संतुष्ट रहता हूँ और हो सके तो यथासंभव और लोगों की भी मदद करता रहता हूँ। मेरा परिवार अनारोग्य से दूर है। यही भाग्य बना रहे तो मेरे लिए यही काफी है। आप आशीर्वाद दीजिए कि हमारी स्थिति सदा ऐसी ही बनी रहे।''

''तुम्हारी संतृप्ति सराहनीय है। भगवान सदा तुमपर अवश्य कृपा दर्शाएँगे।'' यों कहकर साधु ने हृदयपूर्वक राम को आशीर्वाद दिया।

इसके बाद भीम के निमंत्रण पर साधु उसके घर गये। भीम ने बड़े पैमाने पर साधु का आदर-सत्कार किया। उसका आदर-सत्कार राम के आदर-सत्कार से दुगुना था। साधु ने संतुष्ट होकर उसको जो चाहिये, माँगने के लिए कहा।

''मेरा पड़ोसी राम किसी भी विषय में मुझसे बढ़कर न हो, यही आशीर्वाद मेरे लिए काफ़ी है'', भीम ने तुरंत अपनी इच्छा प्रकट की।

साधु ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''अपने लिए जो भी चाहो, माँग लो, दूसरों के बारे में बात करना, उन्हें घसीटना तुम्हें शोभा नहीं देता, यह तो अधर्म है।'' यों उसने भीम को सावधान भी किया। भीम ने कहा, ''राम से बढ़कर होने में ही मेरा आनंद है। आप मुझे

दुर्भाग्य समझूँगा।''

साधु ने क्षण भर तक आँखें मूंद लीं और फिर कहा, ''तुम्हारी इच्छा ज़रूर पूरी होगी। परंतु इसके लिए राम की अनुमति चाहिए।''

भीम साधु की इस शर्त पर सन्न रह गया और बोला, ''आप वर देना नहीं चाहते हैं तो मत दीजिए। आप इस भ्रम में मत रहिये कि राम इसके लिए अनुमति देगा।''

''अरे पगले, राम अनुमति देगा तो तुम उससे भी अधिक संतुष्ट रहोगे, वैभवशाली बनोगे। राम ने अगर अनुमति नहीं दी तो तुलना में वह तुमसे कम हो जायेगा। राम यह रहस्य नहीं जानता, इसलिए दोनों ओर से तुम्हें ही फ़ायदा पहुँचेगा। तुरंत उसे यहाँ आने के लिए खबर भेजो!'' साधु ने कहा। भीम ने राम को ख़बर भेजी। राम ने आते ही, जैसे ही भीम की इच्छा उसे मालूम हुई, अपनी अनुमति दे दी।

साधु ने आश्चर्य प्रकट करते हुए राम से पूछा, ''पुत्र, कोई भी यही चाहता है कि वह दूसरों से बढ़कर हो। भीम तुमसे भी बढ़कर हो, इसके लिए

ऐसा तुमने क्यों किया? इसके पीछे तुम्हारा क्य उद्देश्य है?''

''आप महात्मा हैं। आपसे क्या छिपा है अड़ोस-पड़ोस के लोग हमसे कम स्थिति में ह तो उनके द्वेष, ईर्ष्या, घृणा भाव और अधिक उभरते हैं और हमें परेशान करते हैं। हमारे मन क पीड़ा पहुँचाते हैं। वे हमसे बढ़कर हों तो वे हमार बात भूल जाते हैं, उन्हें हमसे कुछ लेना-देन नहीं होता, नहीं तो हम पर दया दिखाकर हमार सहायता करने आगे आते हैं। अगर हम अपने ह बारे में सोचते रहें, अपनी ही प्रगति से हम संतु रहें तो यह संतोष कभी-कभार ही होगा। दूसर की प्रगति चाहनेवालों व देखनेवालों को नित्य संतोष होता है। वे नित्य संतोषी हैं।''

इन बातों से भीम जान गया कि राम के संतो के पीछे छिपा रहस्य क्या है? वह यह भी जा गया कि साधु ने यही सत्य बतलाने के लिए इ मिलाप का आयोजन किया। उस दिन से दूस की प्रगति देखते हुए वह संतुष्ट रहने लगा। यों व नित्य संतोषी हो गया।

दिवाली की कहानी

महान स्वप्न देखनेवाला

विनायक एक अच्छा रसोईया था। उसका कोई परिवार नहीं था, इसलिए वह इस गाँव से उस गाँव तक घूमता और कोई भी काम करके अपना भरण-पोषण करता था। एक बार उसके मन में आया कि वह एक स्थान पर बस जाए। उसे एक धनी व्यक्ति के यहाँ घर के कामों के लिए रख लिया गया।

उसका मालिक रघुवीर बड़ा ही कंजूस किस्म का व्यक्ति था। उसने इसलिए शादी नहीं की कि शादी के बाद बच्चे होंगे और उसे अपनी सम्पत्ति बच्चों में बाँटनी पड़ेगी।

बुढ़ापे में उसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता पड़ी जो उसका खाना बनाता और कपड़े आदि धोता। रघुवीर जैसा कंजूस किसी परिवारवाले नौकर को कैसे रख लेता। जब उसने विनायक के बारे में सुना तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने तुरंत पैसा-वैसा तय करके उसे काम पर रख लिया।

लेकिन रघुवीर के कंजूसपने ने विनायक को परेशान कर दिया। वह स्वयं भी थोड़ा-सा ही खाता और विनायक को भी ठीक से खाने नहीं देता था।

यह दिवाली का समय था और सभी लोग अपने-अपने घरों को सजाने तथा त्यौहार की तैयारी करने में लगे हुए थे। लोग साज-सज्जा तथा सफाई करके तरह-तरह की मिठाईयाँ बनाने में लगे थे। विनायक ने भी परम्परागत रूप से बहुत
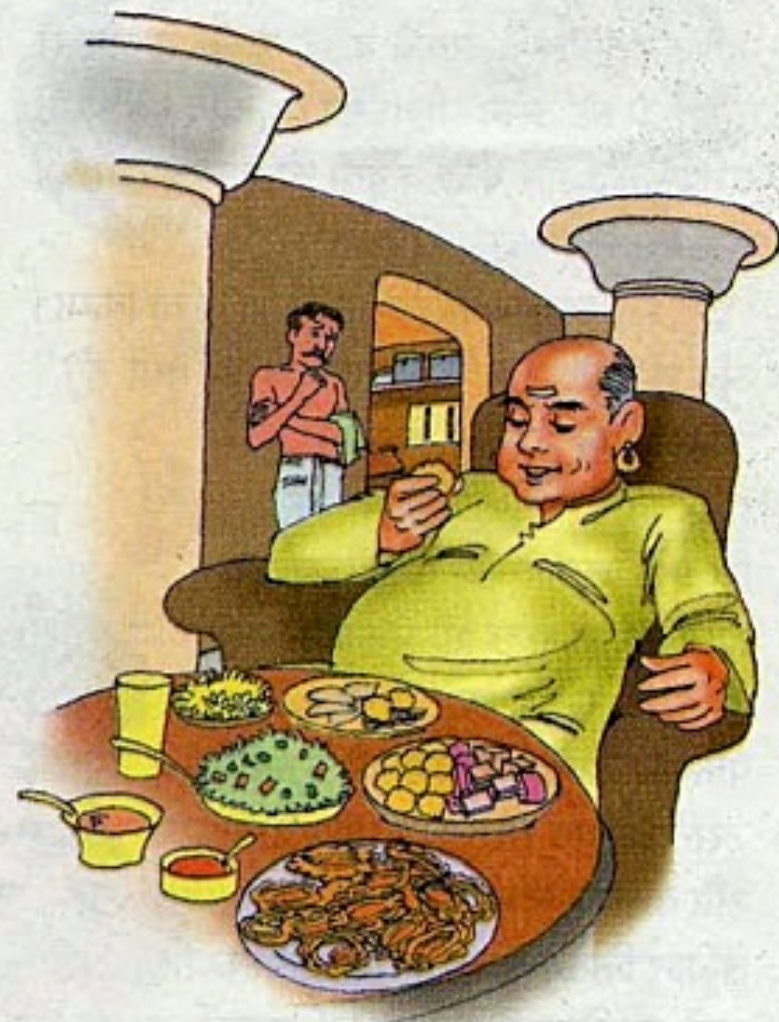
सारी मिठाई बनाई। वह बिना अपने मालिक को बताए यह सब बनाने लगा। वैसे भी दिवाली एक विशेष त्यौहार था। उसने सोचा मालिक इसका बुरा नहीं मानेंगे।

दिवाली के दिन रघुवीर अपना भोजन करने बैठा। पूरी थाली में तरह-तरह के पकवान सजे हुए थे, जो उसे चकित कर रहे थे। ''इसका मतलब क्या है, विनायक? क्या तुमने पूरे सप्ताह के लिए खाना बना दिया?''

दाँत पीसता हुआ रघुवीर अपने रसोईए से बोला।

"मालिक आज दिवाली है। और मैंने सोचा कम से कम साल में एक दिन तो आप आराम से खा लें।" विनायक ने कहा। "बिल्कुल ! क्यों नही हम लोग खा सकते हैं?" रघुवीर ने ज़ोर से कहा, जो कि उसने सोच रखा था, यदि वह अपने रसोईए को और कुछ कहता तो शायद रसोईया उसे गलत या छोटा समझता।

"इस बेवकूफ ने खाने पर इतना खर्चा किया। अब मैं इसे अच्छा खाना खाने ही क्यों दूँ?" उसने अपने आप ही सोचा।

रघुवीर ने निर्णय लिया कि वह जितना ज्यादा खाना खा सकेगा खायेगा, जो कुछ भी पकवान बना है, उसे खतम कर देगा। सारे पकवान काफी स्वादिष्ट बने थे, और उसने लगभग सारा खाना खा लिया और उसका पेट गोल बड़ा फूल गया। लेकिन कितने दुःख की बात है कि चाहे वह जितना चाह रहा था, परन्तु जिलेबी नहीं खा पाया। लेकिन वह स्वार्थी व्यक्ति विनायक को भी वह सब खाने नहीं देना चाहता था। उसने अपने नौकर को जिलेबी खाने से रोकने के लिए एक उपाय सोचा।

"विनायक जिलेबी केवल कुछ घंटों तक ही अच्छा स्वाद देती है। उन्हें एक तरफ रख दो। मैं शामको उन्हें खा लूँगा।" उसने घोषणा कर दी।

जल्द ही रात हो गयी और रघुवीर की भूख का पता भी नहीं था। लेकिन वह सारी जिलेबी खुद खाना चाहता था। इसलिए उसने विनायक को बुलाया और कहा, "क्यों न हम लोग अपने बीच में एक छोटी-सी प्रतियोगिता रखें? जिससे इस त्यौहार का समय और खूबसूरत हो जायेगा। हम दोनों चलकर सो जाते हैं और किसी रुचिकर वस्तु के बारे में सपना देखते हैं। जो भी अपने सपने को अच्छे तरीके से सुना सकेगा, वह कल जिलेबी खायेगा।"

विनायक अपने मालिक का कहा टाल न सका और कहा, "अच्छी बात है मालिक।" रघुवीर खुशी-खुशी सोने चला गया। "मुझे सुबह तक भूख लग जायेगी और सारी जिलेबी खा लूँगा। मैं कहूँगा कि मेरा सपना बहुत ही अद्भुत था। और यह बेवकूफ मुझे जवाब भी नहीं दे पायेगा।" उसने अपने मन में सोचा।

रसोईए को शीघ्र ही अपने मालिक की नाक बजने की आवाज सुनाई दी। उसका पेट भूख से मरोड़ उठा। वह जल्दी से रसोई में गया। उसने जलेबी वाला डिब्बा खोला। "वाह... कितनी अच्छी हैं !" बेचारे ने सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। बस उसके राक्षस मालिक ने ही सब कुछ खा लिया था। उस भूखे रसोईए ने सारी जिलेबी खा ली और सोने चला गया।

रघुवीर अगली सुबह उठा और विनायक को बुलाया। "अच्छा तो यह बताओ कि कल रात तुमने क्या सपना देखा?" उसने विनायक से पूछा।

"मालिक मैंने बहुत ही अच्छा सपना देखा।" विनायक ने अपने हाथों को अपने सीने पर रखते हुए कहा।

''क्या तुम जानना नहीं चाहोगे कि मैंने क्या सपना देखा? मेरा सपना बहुत ही अद्‌भुत था। मैंने सपना देखा कि मैंने एक सुन्दर राजकुमारी से विवाह किया है। और उसके राज्य का राजा बन गया। थोड़ी ही देर बाद मेरा राज्याभिषेक हुआ और मैं तथा महारानी दोनों सिंहासन पर बैठे हुए थे। सारे दरबारी तथा फरियादी भी थे। हम लोगों ने एक मशहूर नृत्यांगना का नाच भी देखा और संगीतकारों के संगीत सुने। मेरा समय बड़ा अच्छा गुज़रा।'' उसने कहा।

''मालिक'' रसोईए ने दुःख भरे स्वर में कहा, ''जैसे ही मैं सोया, काली माता मेरे सामने प्रकट हुई और गुस्से में थी। 'मूर्ख तुम त्यौहार के दिन सुबह से शाम तक भूखे क्यों रहे? अब रसोई में जाओ और सारी जलेबी खा जाओ नहीं तो मैं तुम्हें दण्ड दूँगी।' उन्होंने मुझे धमकाया। मैं डर गया। ओह, माँ ! मैं जलेबी नहीं खा सकता। मैंने और मेरे मालिक ने तय किया है कि जिलेबी वहीं खायेगा जो सबसे अच्छा अपने सपने को बतायेगा। कृपया मुझे मजबूर न करो। मैं अपना बचन नहीं तोड़ सकता। मैंने कहा । लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी।''

''अच्छा अब जवाब मत दो, जाओ और जलेबी खाओ। यदि तुम मेरा कहा नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें मार डालूँगी'', उन्होंने कहा। ''हे मालिक, मैं दिवाली के दिन नहीं मरना चाहता था। और जाकर सारी जिलेबी खा ली।''

मालिक इस लम्बी कहानी से ऊब गया। ''लेकिन यह कैसे हुआ कि मैं उस आवाज से उठा नहीं? मैं तो अगले वाले कमरे में ही सो रहा

था। तुमने मुझे बुलाया ही नहीं होगा, नहीं तो मैं तुम्हारी सहायता के लिए अवश्य आता। तुम्हें घबराहट में आकर वे सभी जलेबियाँ खानी नहीं चाहिए थी।''

मैंने आपकी सहायता की बात सोची थी, मालिक ! लेकिन आप उस महारानी के साथ इतने बड़े दरबार में बैठे थे। आपके आसपास बहुत सारे लोग थे। दरबारी, नाचनेवालियाँ, संगीतकार आदि। जब अंत में मैं आपसे मिलना चाहता था तो आपके सैनिक ने मुझे रोक दिया। और मुझे बाहर धकेल दिया। वे मुझे आपके पास भी नहीं आने दिए।'' विनायक ने कहा।

रघुवीर के पास कोई उत्तर नहीं था। वह अपनी ही चाल पर शर्मिन्दा हुआ। विनायक ने अपनी चालाकी का परिचय दिया। और रघुवीर इतने अच्छे नौकर को खोना नहीं चाहता था। उस दिन से मालिक अपने ही नहीं बल्कि विनायक को भी पेट भर खाने देने लगा।

अजेय गरूड़ा

चित्र : फानि

एक अधिकारी ने नरेन्द्रदेव को आकर एक सूचना बताई जो राजा के कक्ष में लिखकर रखी गई थी।
यदि मात्र गरूड़ा हमारे हाथ में आ जाए तो...!
हाँ रविन्द्र, वह जल्द ही अपने टक्कर के आदमी से मिलेगा।
अब यह क्या हो सकता है? किसने रखा होगा?
मैं राजा का शत्रु नहीं बल्कि उनका मित्र हूँ। मैंने राजा और मुख्यमंत्री को अपने कब्जे में लिया है...

...ताकि मैं उनकी रक्षा कर सकूँ। अब से असली युद्ध शुरू होगा जो अच्छाई और बुराई का होगा। अब असली...
शत्रु सावधान हो जाए! गरूड़ा!
गरूड़ा! गरूड़ा!! तुम लोग जाओ और राजा तथा मुख्यमंत्री को ढूँढो। उन्हें मार डालो! दूसरों से कहो कि यह मेरी आज्ञा है!

यदि गरूड़ा के बारे में बताया तो पुरस्कार मिलेगा? मुझे भी नज़र रखनी चाहिए।
जनस्थान पर घोषणा कर दी गई कि राजा और प्रधानमंत्री के अचानक गायब हो जाने से रबिन्द्रदेव को कार्यकारी सरकार बनाया गया है।

...जनता को सता रहे हैं।

...सबको मार रहे हैं।

...घरों को जला रहे हैं।

...जो सभी प्रकार के गलत कार्य कर रहे हैं।
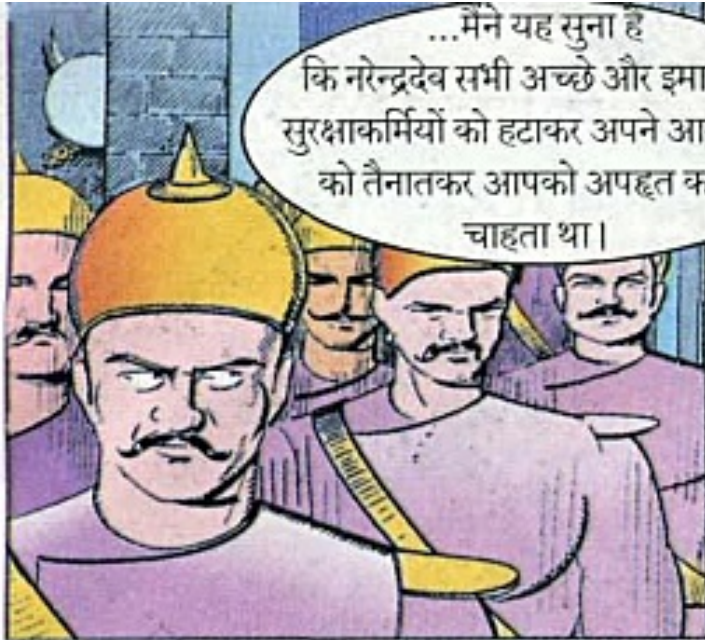
...मैंने यह सुना है कि नरेन्द्रदेव सभी अच्छे और इमानदार सुरक्षाकर्मियों को हटाकर अपने आदमियों को तैनातकर आपको अपहृत करना चाहता था।
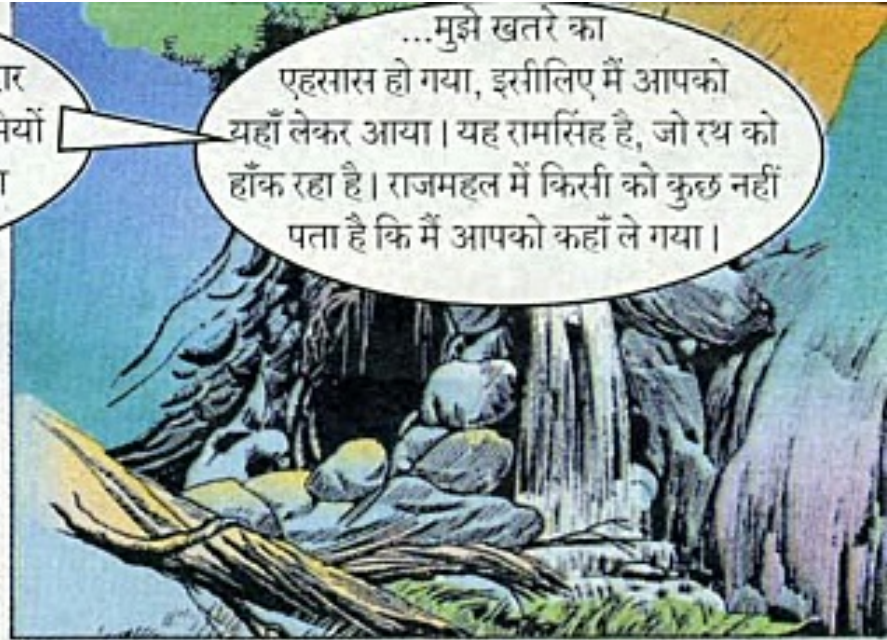
...मुझे खतरे का एहसास हो गया, इसीलिए मैं आपको यहाँ लेकर आया। यह रामसिंह है, जो रथ को हाँक रहा है। राजमहल में किसी को कुछ नहीं पता है कि मैं आपको कहाँ ले गया।

यह झरने के पीछे की गुफा काफी सुरक्षित है।
लेकिन आदित्य तुम मेरे साथ रहोगे न ?
मुझे राजधानी जाकर स्थिति को देखना होगा। रामसिंह आपकी सुरक्षा का ध्यान रखेंगे। रामसिंह !

रामसिंह प्रवेश करता है।
अरुणा यहीं पर पहले से ही है।
आओ हम महाराज से मिलें।

महाराज यह रामसिंह है। अरुणा मेरे पिता से आयुर्वेद पढ़ रही थी। यह आपके साथ रहेगी।

बेष बदलकर आदित्य राजधानी पहुँचता है।
हमारा मुख्यमंत्री कितना अच्छा आदमी था। यह दुर्भाग्य की ही बात है कि वह भी गायब हो गया।
क्या चाल है ! अभी इसे सबक सिखाना बाकी है।
क्रमशः

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

सितम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

आयुष शर्मा
के. राजेश ट्रेडिंग कोर.
११/१, सुटरकित स्ट्रीट (आई.एफ.ए. बिल्डिंग),
कोलकत्ता - ७०० ०७२.

विजयी प्रविष्टी

''फोटो खींचो मेरी अकेली की ।
मेरे संग मेरी सहेली की ॥''

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) NOVEMBER 2001 Regd. with RNI. No. 1087/57 Registered No. TN/Chief PMG-866/2001